Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा
सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"kZ 14 vad 11 30 uoEcj 2015 ewY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

किसान मसीहा–सर छोटू राम

(24 नवंबर 1881– 09 जनवरी 1945)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

आज किसान इतनी प्रगति कर गया कि हम रिमोट सैंसिंग से भू के गर्भ की जानकारी जानते हैं लेकिन अरबों की यह आधारभूत संरचना भी अक्सर खरी नहीं उतरती। ताजुब होता है कि हमारे दादा-परदादा जो अनपढ़ कहलाते थे कभी स्कूल नहीं गए कोई वैज्ञानिक आला उनके पास नहीं था लेकिन पृथ्वी सूंघकर भूगर्भ की जानकारी दे देते थे। पानी मीठा होगा या खारा, कितना गहरा होगा, आकाश की ओर देखकर आगामी मौसम का अनुमान लगा लेते थे। इसी ज्ञान की बदौलत वे फसल की बुआई, रूपाई करते थे। वे नंगे पांव डाक्टर, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और संस्कृति के धनी समाज को एकता और अखंडता में बांधे हुए थे। यह अद्भुत ज्ञान उन्हे मां से ही मिला था। शिवाजी को उनकी माता जीजाबाई से मिली ज्ञानप्रद शिक्षा की बदौलत वे छत्रपति शिवाजी बने। अर्जुन के बेटे अभिमन्यु को मां के गर्भ से ही चक्रव्युह रचना का ज्ञान हो गया था। दीन बंधु सर छोटूराम ने इस अद्भुत ज्ञान की खान का दोहन करने की ठानी और चिंतन मनन कर 'स्त्री शिक्षा' इसका उत्तर खोजा और इसकी परिणिती में वक्त तो लगा लेकिन वे नींव पत्थर रख गए। एक नई सोच को अमली जामा पहनाने का रास्ता प्रशस्त कर गए जिसे चौधरी देवीलाल ने आगे बढ़ाया जिसका आज समाज उनका ऋणी है। कृतज्ञ राष्ट्र उन्हे सदा नमन करता रहेगा। आज हमारी सरकारी को बेची बचाओ, बेटी बढ़ाओ का याद आज गया जबकि कन्या शिक्षित करो उनके जीवन का लक्ष्य रहा। सर्वप्रथम उन्होने अपने जीवन में ढाला फिर किसी को करने को कुछ कहा।

दीनबंधु की केवल बेटियां थी उन्हे सगे, संबंधियों ने दूसरी शादी की राय देकर वारिस की मनोकामना की तो उन्होने कहा कि पूरा पंजाब मेरे बेटी-बेटे हैं, फिर यह झमेला क्यों उठाऊं। उनका मानना था कि स्त्री शिक्षित होगी तो बच्चे को अच्छे संस्कार मिलेगें। समाज की विडंबना है कि अमने स्त्री को शिक्षा से वंचित क्यों रखा,चौधरी छोटूराम का जीवन सरल सरस था वे मौके की नजाकत को समझते थे और जीवन को पानी का उदाहरण देते थे :-

पानी आकाश से गिर तो बारिश
आकाश की ओर उड़े तो भाप
जमकर गिरे तो ओले
गिरकर जमे तो बर्फ
फूल पर गिरे तो ओस
फूल से निकले तो इत्र
जमा हो जाए तो झील
बहने लगे तो नदी
सीमाओं में रहे तो जीवन
सीमाएं तोड़ दे तो प्रलय
आंख से निकले तो आंसू
शरीर से निकले तो पसीना
गर्म धरा पर गिरे तो खत्म
खेत में गिरे तो फसल
और हरिचरणों में गिरे तो चरणामृत।।

इस सार को सभी जानते-पहचानते हैं लेकिन मानते नहीं।

आजादी के 68 वर्ष बाद भी दीनबंधु की यादगार में उनकी नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए, किसान-कामगार के कल्याण के लिए कोई कारगर योजना अथवा स्मृति स्थल एवं चेयर नहीं स्थगित की गई है। वर्तमान सरकार द्वारा उनकी यादगार में चेयर स्थापित करने का कार्यक्रम बनाया जा रहा है

'kk s'k i`t&2 ij

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 12.02.2016

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 135वीं जयंती के भुभ अवसर पर समारोह का आयोजन 12 फरवरी, 2016 को दीनबंधु सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्शण होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं, खेलों में उत्कृश्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2015 से दिसंबर 2015 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। अतः वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाश नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 15 जनवरी 2016 तक सूचित करें। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला द्वारा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 15 जनवरी 2016 तक भेजें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

’k"k i`"B &1

लेकिन किसान, काश्तकार को अपनी जीवन व्यवस्था के सुधार हेतू आज भी सर छोटूराम की नीतियों को सुचारू तौर से लागू करने का इंतजार है। हरियाणा की पिछली कांग्रेस सरकार द्वारा तत्कालीन मुख्यमंत्री के पिता श्री की यादगार में तो जगह-जगह समाधी स्थल व चेयर स्थापित कर दी गई लेकिन किसान मजदूर के मसीहा के लिए कोई भी समाधी या चेयर नहीं बनाई गई। हरियाणा में इनेलो सरकार के कार्यकाल में मुख्यमंत्री चौधरी औमप्रकाश चौटाला द्वारा लाहोर स्थित सर छोटूराम के कार्यालय निवास से उनके स्मृति चिन्ह व अन्य सामान को लाकर उनके पैतृक निवास गढ़ी सांपला में उनकी यादगार में बनाए गए संग्रहालय में स्थापित करके उनके आदमकद समाधी बनाई गई थी लेकिन आज नैशनल हाईवे के ऊंचा उठाए जाने के कारण यह समाधी आम जन से ओझल हो गई है और उनके यादगार संग्रहालय की भी सरकार द्वारा उचित देखरेख नहीं की जा रही है जो कि समस्त किसान व कामगार वर्ग का अपमान है। जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा विगत 20 साल से दीनबंधु की यादगार में चेयर स्थापित करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय सरकार को पत्र लिखकर प्रयास किए जा रहे हैं। उनकी यादगार में चेयर स्थापित करना तो दूर जाट सभा द्वारा पंचकुला में संचालित सर छोटूराम जाट भवन के नजदीक वाले चौक का नाम ‘सर छोटूराम चौक’ रखने के अनुरोध पर भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा दीनबंधु के पैतृक गांव गढ़ी सांपला (रोहतक) का नाम ‘छोटूराम नगर’ किए जाने के लिए भी प्रदेश सरकार से अनुरोध किया जा रहा है।

दीन बंधु का सफर आसान ना थी। गढ़ी सांपला (रोहतक) में एक छोटे से किसान के बेटे ने सब कुछ बचपन से झेला और कुछ कर गुजरने की ठानी और जो सोचा वही कर दिखाया। छोटू से छोटू राम तब सर छोटू राम और अंत में गरीब मजलूम के मसीहा दीन बंधु सर छोटूराम बने। यह राह इतनी आसान नही थी लेकिन अनेकों बाधाएं पार करते हुए इस मुकाम को हासिल किए आज कृतज्ञ राष्ट्र स्वतः कह रहा है -

‘उठ दर्द मदां दिया दर्दीया, किते कबरां बिचो बोल।
आज किसी नई जन कल्याण की कोई नई सोच खोल ।।’’

कुली-गुली-जुली (रोटी कपड़ा और मकान) मानव जीवन की आधारभूत सरंचना है। समाज को उद्योग की आवश्यकता है ताकि इस उत्पाद को उचित रूप से ढाल सके। उद्योगपति इस प्रोसैसिंग हेतू अपनी लागत और लाभांश जोड़ कर कीमत तय करता है जो उसका हक है लेकिन किसान को ऐसी सुविधा नहीं है। किसान कर्ज, मर्ज, गर्ज में पिसता है। सर्दी, गर्मी और बरसात मौसम की मार झेलता है। फसल को नुकसान देने वाले कीड़े-मकौड़े, पशु-पक्षी, चोर कभी सूखा कभी डूबा की मार खाता हुआ सदा आसमान की ओर दया दृष्टि बनाए रखने और मेहर की दुआ मांगता हुआ फसल घर आने की उम्मीद लिए पूरा परिवार भूखे पेट बैठा होता है और फसल घर पर आने से पहले साहूकार का पंजा आ जाता है लेकिन फिर भी वह अपने उत्पाद की कीमत खुद तय करने का हक नहीं रखता। सर छोटू राम ने उसकी दिक्कतों को समझा और उसके समाधान हेतू इकागर चित होते हुए तन मन से लग गया।

जिला हिसार और गुड़गांवा आज का भिवानी, रिवाड़ी, फतेहाबाद, सिरसा जींद, कैथल, रोहतक, झज्जर तथा गुड़गांव अक्सर वर्षा ना होने के वजह से अकाल की मार का क्षेत्र था। कृषि के लिए पानी की नितांत आवश्यकता है बल्कि कहना उचित होगा कि जल बिना मछली ही नहीं बल्कि जल बिन किसान के हालत भी बदतर होते हैं।

दीन बंधु ने इस कहर से निपटने और बार-बार किसानों को दिए जाने वाले तकावी ऋणों पर सरकार द्वारा खर्च होने वाली भारी भरकम रकम से सदा-सदा के लिए निजात दिलाने हेतू सतलूज नदी पर बांध बनाकर पूरे क्षेत्र को वर्ष भर पानी की उपलब्धता से कृषि उत्पादन दोगुनी होने के कयास लगाए गए। दिसंबर 15, 1930 को यह सदन के पटल पर रख दिया गया हालांकि तब तक बहुत सा पानी बह चुका था और बांध की लागत बढ चुकी थी क्योंकि इसकी योजना 1915 से 1925 के बीच हुए सर्वे पर आधारित थी जिसमें बार-बार रोड़े और अटकलें आ रही थी। दीन बंधू ने यह सभी अटकलें बाधाएं अपने तेज दिलो दिमाग से पार कर ली जिसमें सक्कर बैराज को होने वाली क्षति, बंबे सरकार द्वारा खड़ी की ÷ई बाधाएं, महाराज बिलासपुर के क्षेत्र की बांध के पानी के नीचे आने वाली भूमि तथा किसानों की क्षति, सिंध क्षेत्र को 6 करोड़ का मुआवजा शामिल थी। दीन बंधु ने सिरसा सहकारी फार्म में पैदा हुई कपास का जिक्र करते हुए बताया कि क्षेत्र की भूमि बहुत उपजाऊ है और पानी के बिना प्रति एकड़ कपास का उत्पादन 27 मन के करीब था और पानी की उपलब्धता से यह 40 मन हो गया। सर छोटू राम ने सदन को बताया कि इस हिसाब से बार-बार अकाल की स्थिति पर सरकार द्वारा किए जाने वाले खर्चे जो कि केवल गुड़गांवा क्षेत्र में 42 लाख रूपये वार्षिक औसतन तकावी ऋण थे, सदा-सदा से निजात के साथ-साथ क्षेत्र की प्रगति होगी। केवल किसान ही नहीं, वाणिज्य में भी प्रगति होगी और क्षेत्र का चहुमुखी विकास होगा। सर छोटू राम की मेहनत रंग लाई, बांध बनना शुरू हो गया। आधुनिक भारत का मंदिर कहलाने वाले भाखड़ा बांध तैयार हुआ जिससे सिंचाई के साथ-साथ बिजली उत्पादन भी हो रहा है जिससे देश के कई कल कारखाने चल निकले। हालांकि इस सपने को साकार करने वाला तब तक इस नश्वर संसार को छोड़कर जा चुका था लेकिन उनकी स्मृति की सुगधं चारों ओर फैली है।

कृषि भूमि किसान की रोजी रोटी का एक मात्र साधन है। गरीब किसान-मजदूर के मसीहा सर छोटूराम इस तथ्य से भली भांति अवगत थे। उन्होने कभी मंदिर, मस्जिद में पूजा अर्चना को अधिमान नहीं दिया बल्कि अपने प्रकृति प्रेम का ज्वलंत उदाहरण अपना जन्म दिन ‘बंसत पंचमी’ को मना कर दिया। उनका मानना था कि किसान की सभी आशाएं व त्योहार कृषि से जुड़े हैं। किसान का जीवन जितना जटिल है उसका बर्ताव उतना ही सरल है वह कभी अपनी परिवार की चिंता नहीं करता। सब कुछ राम भरोसे छोड़ सख्त मेहनत पर जुटा रहता है। गीता का उपदेश ‘‘कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर’’ को ही लक्ष्य मानकर हल का सिपाही अपना जीवन गुजार देता है। सर छोटूराम के जीवन काल में किसान की आर्थिक दशा बहुत दयनीय थी उपर से साहूकार की धांधली कृषक समाज को बेड़ियों में जकड़ कर रखती थी।

सर छोटूराम ने किसान की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया तथा उसे साहूकार एवं सूदखोर के शिकंजे से निकालने हेतू सबसे पहले ‘काणी

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख हैं, यदि वे उसके अनुसार आचरण नहीं करते। –हितोपदेश

डंडी काणी बाट प्रथा' को समाप्त करवाया तथा ऐसे अनेकों सुधारात्मक पग उठाए जिससे कृषक समाज में जागृति आई हालांकि कृषि आज भी लाभकारी नहीं है क्योंकि इस समाज को अभी भी एक छोटूराम की तलाश है। आज भी कृषक समाज के उत्पादन का मूल्य कोई दूसरा तय करता है जो 4-6 माह की सख्त मेहनत से मौसम की मार झेलकर पैदा की हुई फसल खरीदते वक्त औने-पौने भाव खरीदी जाती है लेकिन कुछ हफ्ते उसके गोदाम में रखने उपरांत दो गुने भाव बेची जाती है। कभी प्याज, कभी दालें, व्यापारी की लालसा और राजनैतिक रोटियां सेंकने की भेंट चढ़ रही हैं। किसान के हिस्से केवल घड़ियाली आंसू और वायदे आते हैं उसकी दुर्दशा की और किसी को सरोकार नहीं।

चौधरी छौटूराम ने किसान की दशा उसी समय भांप ली थी तथा उसे अपने बच्चों को पढ़ाने लिखाने की प्रेरणा दी। मेधावी छात्रों को वे अपने खर्चे पर भी पढ़ाने का प्रयास करते रहे इसलिए उन्होने 'किसान कोष' की सूरत में एक 'वजीफा कोष' भी लाहौर में स्थापित किया था। पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता अब्दुस कलाम उसी वजीफे से पढ़े थे। पुरूस्कार जीतने पर उन्होने स्वंय कहा था कि अगर छोटूराम ना होता तो अब्दुस कलाम आज इस मुकाम पर ना होता। सर छोटू राम ने ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिले तनै टूटे जूते वहां मिलेगें बूंट'' का नारा देकर किसान को अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतू नौकरी करने की भी प्रेरणा दी। चौधरी छोटूराम जैसी बहुमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में समझना-देखना होगा। जब तक उनकी विचार धारा युवा वर्ग में पूर्णतः जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्णस्वराज भारत में नहीं आ सकता। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि दीन बंधु की विचारधारा का सफर मानसिक स्तर पर तीव्र गति से चले ताकि 'ग्राम स्वराज' का लक्ष्य पूरा हो सके। चौधरी छोटूराम एक युग पुरूष थे जिन्होने कृषि क्रांति का सुत्रपात किया। आधुनिक चेतना के वे सुत्रधार थे। किसान के हितों की वकालत करते हुए वे वायसराय तक भिड़ गए।

चौ0 छोटूराम का जीवन उड़ते बालू-कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। उन्होने मुंशी प्रेमचंद के पात्र 'होरी' गोबर और धनियां की पीड़ा का अनुभव किया था, आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया बल्कि एक क्रांति दूत बनकर उभरा। वे हमेशा कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' चौ0 छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सूत्रधार बने। दीन बंधु सर छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं को आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने पर उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्षों तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

दीनबंधु की राजनैतिक यात्रा भी अनूठी थी। वे सन 1923 में पहली बार रोहतक (दक्षिण-पूर्वी ग्रामीण क्षेत्र) से पंजाब विधानपरिषद के सदस्य बने और राजनीतिक पारी शुरू की। सन 1924 में उन को पंजाब मंत्रीमंडल में शामिल किया गया। पंजाब विधान सभा में गैर-कृषक सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होने किसान समुदाय के हित को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था और यहीं से उनकी राजनीतिक प्रतिभा और सूझबूझ का चारों और सिक्का चलने लगा था। यहीं से चौ0 छोटूराम का भविष्य निर्माण हुआ। उनका मुख्य लक्ष्य पंजाब के किसान को ऋणदाता के चंगुल से मुक्ति दिलाना था। इस मिशन प्राप्ति हेतू ही मानों उन्होने अवतार धारण किया हो।

संयुक्त पंजाब में किसानों की आर्थिक मुक्ति हेतू छोटूराम ने जो भंयकर संघर्ष किया उसमें उनको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। पंजाब के इतिहास में अन्य कोई ऐसा आंदोलन नहीं चला जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न मतों को मानने वाले लागों को इतनी बड़ी संख्या में संघर्षरत कर दिया। छोटूराम बेजुबान किसान की मजबूत व प्रभावशाली आवाज बने। देहात के गरीब व किसानों के कष्टों को दूर करने के लिए अनेक बिल पारित करवाए। सन् 1937 के पंजाब विधानसभा के चुनाव में 175 में से 102 सीटें जीतने पर इन्हे सर की उपाधि से सम्मानित किया गया व जिन्नाह की पार्टी को मात्र 2 सीटें मिली थी। ऐसी महान विभूति को किसी एक जाति समुदाय से जोड़ा नहीं जा सकता । दीन बंधु अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक कामगार, काश्तकार व किसानों के दुखों में गमगीन रहते हुए हमेशा इन कौम के दुखड़े को यह कहकर उजागर करते रहे - ''इस कौम का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं, डर है कि इसके गम में घुट-घुट के मर ना जाऊं''।

आज किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बाढ, बीमारी के बचाव हेतू केंद्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटू राम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटू राम को सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है। इस कोष से किसान-मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ-साथ आज कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतीशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटू राम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वप्न साकार हो सके। इसी प्रकार किसान की भूमि अधिग्रहण की नीति पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि कृषि भूमि पर आधारित समस्त ग्रामीण समाज की दयनीय हो रही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

What is wrong with Urban Growth and Urban Governance?

Ram Niwas Malik

Containment/management of ever and over growing urban sector and its goverance have become two big challenges for the urban planners and the governments (Centers and States). The migration of rural populace towards city centres is increasing day by day. The 2011 census figures indicate that urban population has increased from 27% to 31% (9.75 crore people) during the last decade. In fact the urban centers are acting like magnets to pull out people from the surrounding villages for two reasons i.e. search for employment and preference for urban living. The migration will show reverse trends only if the goverments devise and formulate a sound reflex policy to contain future urban development followed by its strict implementation.

Presently all our cities and towns, are growing haphazardly to become agglomerates leading to urban blight. Two strong fundamentals of town planning are smooth traffic flow and sanitation and both are conspicuous by their absence in all the cities/town of India. Population of Bombay was 3.0 lac in 1951. Now it is 210.0 lacs. Other capital cities are also growing exponentially likewise. India has only one well planned city called Chandigarh. (Bhubneshwar and Gandhi Nagar are not of that class). But beauty and ambience of Chandigarh have been marred by ring side ribbon development up to many kilometers. New townships of private developers are further mushrooming near Mohali, Mullanpur and Pinjore giving a demon like configuration to the tri-city. "The beautiful agriculture landscape between Sector 26 and Panchkula and the green buffer zone between Secretariat Complex and the Shivalik Hills have been lost for ever. The number of slum dwellers has gone upto 3.0 lacs. Instead of preserving its beauty and reseraching the flaws in its layout, we have spoiled the City Beautiful beyond recognition. Same is the fate of other not so beautiful towns. The country hardly has 10 cities where 100% sewerage system has been provided.

The process of haphazard growth of town/cities started when the town and country planning deparments (T&P) of the states closed their eyes on the mushroom growth of colonies in the agricultural land abutting the Municipal boundaries. These colonies were developed with very poor infrastructure facilites by petty property dealers. The governments of the day per-force approved these raw colonies off and on before the elections. This process has been mainly responsible for unplanned growth, creating slum conditions and overlaoading the existing weak infrastructure.

Credit goes to the states of Haryana and Punjab for creating Urban Development Authorities (PUDA & HUDA) to develop modern sectors at the district towns. Master planning of towns was done by the T & P Department. But it lacked both vision and imagination as the departments did not have and commission the services of renowned town planners like Corbusier. In the process, the T & P Department committed four inadvertent mistakes.

(1) It did not work out the ideal size of the new township. (2) It circumscribed the old city with new sectors thus creating over-crowding and serious traffic problems in the central part of the town. (3) The sustainability concept was totally lost sight of and environment clearances of the Master Plans were not obtained from MOEF. (4) Private players were allowed to develop townships and housing societies with highly irregular shapes (and spreading into 2-3 sectors) making the internal lay out of the sectors and sub-sectors horrendous. To add to the woes, ribbon development continued to take place simultaneously.

The ideal size of a township (with a square size) should consist of 36 sectors accommodating a population of 6.0 lac people. In case of capital cities, it may have 50 sectors with a layout such that a very wide green belt or a rose garden separates the two sub - cities of 25 sectors on each side forming two independent districts. Sizing the town is essential because as it grows further, the job of providing infrastructures like, water supply, sewerage, drainage, solid waste management and traffic control becomes costlier and tedious. The working environment of a township becomes chaotic once the population exceeds 5.0 lacs and dysfunctional if it exceeds 15.0 lacs (see Ludhiana). The Master Plan of Gurgaon township has been enlarged to consist of 110 sectors (instead of 60) to accommodate a population of 40 lacs. Master Plan was read wrong f times by the previous government to suit the requirements of builders. Once all the sectors and commercial hubs are fully developed, it will require 350 cusecs of raw water and 6,000 MW of power. No government will be able to spare so much water for one township only. The traffic situation has already become unmanageable. The existing air pollution level is gradually making the environment inhabitable. With this background, will the Millennium City once nearby SEZs are also developed simultaneously be sustainable only town planners can reply? The sectors in Sonipat Master Plan spread from village Bhatgaon to Delhi border - a distance of 30 kms.

The right approach should have been to circumscribe the old city with a circular road to limit its further growth and set up a separate township (square size) of 36 or 49 Sectors (depending upon the potentiality of growth) on one side. MOFFUSIL towns like Pataudi, Tauru, Faruknagar and Sohna should have been developed simultaneously with

6 to 9 sectors each to reduce demographic pressure on big ticket towns like Gurgaon. The concept of developing smaller towns of 4 sectors should have been introduced to serve a group of 10 villages to stop the rural migration towards the district towns. Accordingly, if decadence of urban environment is to be saved then future urban growth should be contained in bigger towns and allowed to spread in Tehsil towns with complete moratorium on unplanned growth initiated by unscrupulous builders.

The growth of urban centers in other states is much worse. U.P has laid all its eggs in one basket i.e. NOIDA only. Lucknow is the only other city being developed separately on modern lines. Other big cities like Moradabad, Rampur, Bareilly, Ayodhya, Hardol, Kanpur, Aligarh are growing in their own free lance style. Some situation is prevailing in the other states as well. Thus lack of urban planning has led to the growth of 53 mega cities and 43 cities having population between 5-10 lacs. If proper policy of managing urban growth is not formulated and strictly implemented, more and more towns will be converting into veritable hell during the next few decades. The new effort to build 100 Smart Cities will not fructify because each town requires a sum of Rs.25,000 crore and the government does not have that much money.

Urban Governance

Indian democracy is now fairly mature. But still there is an unending talk of poor governance all around. Urban governance is even worse than the general level prevailing in the country. A city is a complex web of several systems and sub-systems. Therefore good governance and management is the key to better the lives of its residents. This will be possible by taking two important steps. Firstly there should be an end to the haphazard growth. Secondly allow the MCs to administer the city with a fare degree of autonomy. Most problems in a city emanate from the defective model of urban governance. We are still persisting with the old British system of urban governance and a proper model of governance has not been sketched till now with the result the administrative and financial authority remains concentrated in the hands of the state governments. Presently Municipal Committees or Corporations remain (with weak financial muscles) engrossed with a diminutive role of scavenging, approval of building maps, building small shops and dealing day to day minor irritants of the residents. Realizing this handicap, late Sh. Rajeev Gandhi took the bold initiative in 1992 to evolve more powers to the Panchayati System and MCs under the 74th Amendment of the Indian Constitution. But out of 18 functions, the states did not devolve even half to the Municipalities. If all the powers and functions were transferred to local self government then a Chairman of a Zilla Parishad or Mayor of a Municipal Corporation would become more important than even the Cabinet Minister. The local MLAs would lose their importance and play second fiddle to the Chairman/Mayor. Obviously the State governments did not countenance this scenario and arrogated all the powers to them. Since 90% Chairman/Mayors belong to the ruling party, they cannot dare to ask the Chief Minister to delegate more authority to them. The Chairman Zilla Parishad Gurgaon once told, "The moment I ask the CM for more powers, I will be dethroned". Also there is total erosion of the financial domain of the Municipal bodies. The Mayor of Municipal Corporation of Gurgaon has the power to sanction an estimate of Rs.20.0 lacs only. Presently all the Municipal bodies are starving for funds whereas 80% revenue is being collected from the cities only. Gurgaon alone contributes 46% revenue to the State exchequer. Then why the MCs have to demand funds from the state Governments like alms is anybody's guess.

The basic intention of the 74th Amendment was to empower the Municipalities to act as mini-state governments and lighten the administrative load of the State Governments. But the state Chief Ministers have become power renegades and usurped all the municipal authority. A la-Sarkaria Commission needs to be set up to define the extent of delegation of powers to the local self governments. Now the city is administered by multiple authorities and parastatal departments rendering specific services. For example, power supply is managed by the power utilities, water supply by public health department or Jal Nigam or new sectors by Urban Development Authority. The result is that a city is unable to grow with synergetic and visionary approach like a living organism. The need of the hour is to set up a single authority which should have under its fold all the offices of relevant departments including education with a proper secretariat. It should run like the state government on a reduced scale. If this model is adopted then the work in the Government Secretariat will be greatly reduced bringing much needed efficiency in the system. Also the single authority will be able to plan the development of the city and its future expansion properly. As a result of poor governance and disorder, our cities have continued to languish in backwardness even 64 years after the independence. A city is fortunate if it happens to be the hometown of the State Chief Minister. Bhiwani got modern look when Ch. Bansi Lal was the Chief Minister of Haryana. Now the city has degenerated into the status of a Tehsil town. Hissar started shinning under Bhajan Lal. Rohtak got its lucky break under Sh. B.S. Hooda. Now it is the turn of Karnal to outshine other cities.

Consequently, need of the hour is to redesign a proper model for governance of urban areas to meet the basic requirements of an efficient administration. The cration of a single accomplished authority consisting of engineers, doctors, administrators and planners is the key to meet this objective and allow our cities to grow on expected lines.

चिंता नहीं चिंतन करें

नरेंद्र आहूजा

वर्तमान समय में मनुष्य के जीवन की अधिकांश बिमारियां उसकी जीवन शैली में चिंता करने के कारण हैं। दरअसल हम भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में भोग विलासिता में फंसे सुख के साधन जुटाने के लिए बिना चिंतन विचार किये दुष्कर्म करते हैं और फिर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में जब कर्म फल प्रारब्ध नियति के रूप में सामने आते हैं तो हम फिर चिंतन के स्थान के स्थान पर चिंता करने लगते हैं। दूसरी अवस्था में हम कर्महीन होकर कर्मों को बंधन का कारण मानकर काम का फिक्र, फिक्र का जिक्र कर, पर काम मत कर के अपनी सुविधा के सिद्धांत पर चलने लगते हैं। इस दूसरी अवस्था का शिकार अधिकांश तथाकथित ईश्वर भक्त जो केवल नाम जाप, दर्शन, तीरथ आदि में ही अपने जीवन का कल्याण मानते हुए कर्महीन होकर होते हैं।

उपरोक्त दोनों स्थितियों में चिंता मनुष्य को चिता की ओर ले जाती है। शुगर मधुमेह, ब्लड प्रेशर, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग जैसे साइलेंट किलर के नाम से बदनाम बीमारियां चिंता के कारण शुरू होती हैं और मनुष्य के जीवन के साथ ही समाप्त होती हैं और मृत्यु का कारण बनती हैं। चिता मुर्दे को जलाती है और चिंता जिंदा को और चिंता किए जाने वाले प्रश्नों की सजा चिता बतलाई गई है। चिंता करने वाला मनुष्य अपने जीवन का शत्रु है। चिंता मनुष्य की कर्म करने की शक्ति नष्ट कर देती है और चिंता कमजोरी का संकेत है जो जीवन में कर्महीनता के कारण कायरता और विष भर देता है।

यदि हम कभी विचार करें तो पायेंगे कि जिस कार्य की हम चिंता कर रहे हैं वह कार्य कभी अधिक नहीं होता बल्कि चिंता उसे अधिक बड़ा करके दिखलाती है और मनुष्य चिंता में ग्रस्त उस कार्य को प्रारंभ भी नहीं कर पाता और व्यर्थ चिंता में समय व्यतीत करता चिंतित रहता हुआ व्याधियों से ग्रस्त होकर अपने जीवन को समाप्त कर चिता की ओर अग्रसर हो जाता है। हम शायद उस काम को करते हुए इतने ना थकें जितने उस काम की चिंता में उसे किये बिना थक जाते हैं। चिंता एक ऐसा दीमक है जो घुन की तरह मनुष्य को अंदर ही अंदर खोखला कर देती है और चिंताग्रस्त व्यक्ति की क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है। चिंता के बारे में सोचने से चिंता और अधिक बढ़ती है। किसी काम को ना करके केवल उसकी चिंता करना और फिर उस चिंता के बारे में सोचते रहना चिंता को वैसे ही और अधिक बढ़ा देता है जैसे अग्नि को ईंधन। किसी भी काम के विषय में चिंता ना करके केवल चिंतन करके काम करने से चिंता वैसे ही समाप्त हो जाती है जैसे बिना ईंधन के अग्नि। कार्य की विधि के बारे चिंतन करके की गई कर्मशीलता पुरुषार्थ चिंता की अग्नि को जल की भांति बुझा देता है।

मनुष्य जीवन में जितना समय किसी भी काम की चिंता में लगता है यदि उतना समय उस काम को करने में लगाये तो शायद कोई चिंता शेष ना रहे। चिंता तो वह रक्तबीज है जो और अधिक चिंता को जन्म देती है। यदि मनुष्य के मन में चिंता हो तो वह अपनी शक्ति का पूरा उपयोग नहीं कर पाता इसलिए मनुष्य को चिंता त्यागकर उस कार्य को पूर्ण चिंतन करते हुए उस कार्य को अपने पूर्ण आत्मविश्वास एवं शक्ति के साथ करना चाहिए इससे चिंता स्वतः समाप्त हो जाती है। चिंता से मुक्ति पाना मनुष्य का प्रथम दायित्व है और चिंता से मुक्ति केवल और केवल चिंतन करते हुए धर्मानुसार कर्मशील बनकर ही पायी जा सकती है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के द्वितीय मंत्र में 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवेषच्छतं समाः' कहकर मनुष्य को सौ वर्ष तक कर्म करके जीने का आदेश दिया है और यही सिद्धांत योगेश्वर कृष्ण ने स्वजनों की हत्या के पाप की व्यर्थ चिंता में ग्रसित होकर अपने कर्तव्य कर्म के धर्म को त्यागकर विषाद में फंसे अर्जुन को गीता में कर्मयोग का ज्ञान देते हुए कहा था – कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन् अर्थात फल की चिंता त्याग कर मनुष्य को अपने धर्म कर्तव्य कर्म का निर्वहन करना चाहिए।

जो चित्त चिंता में लगे, चले चिता की ओर ।
चिंतन में जो चित्त लगे, पाये उसका ठौर ।।

मनुष्य के लिए चिंता का सर्वथा त्याग और उसके स्थान पर कार्य के विषय में चिंतन करते हुए उस कार्य को करना ही उचित है।

हमारी गिरती अर्थव्यवस्था का जिम्मेदार कौन ?

संदीप सुहाग

आज हमारे देश पर 55 लाख 87 हजार 149 करोड़ का कर्ज है। हर साल हमारे देश के बजट का बड़ा हिस्सा कर्ज का ब्याज भरने में चला जाता है। इस बार मोदी सरकार ने आपके टैक्स को 4 लाख 27 हजार करोड़ तो पिछले कर्ज का ब्याज भरने में खर्च कर दिया। सिर्फ ब्याज भरने में 4 लाख 27 हजार करोड़ चला जाता है जबकि मूलधन वहीं का वहीं खड़ा रहता है।

आज हमारी अर्थव्यवस्था पूरी तरह गुलामी की ओर जा रही है। अब आप बोलेंगे कि ये कर्ज किसने लिया तो जवाब है आज तक रही सरकारों ने, पर सरकार ने कर्ज क्यों लिया तो जैसा कि मैंने आज तक सुना है सरकार भ्रष्ट है प्रशासन भ्रष्ट है इसलिए हमारे देश पर इतना कर्ज है। लेकिन भ्रष्टाचार शुरू कहां से होता

है। भ्रष्टाचार शुरू होता है एक शब्द से जिसे कहते हैं 'फ्री'। इस पर आप को एक कहानी जरूर बताना चाहूंगा।

'एक बार एक बहुत ज्ञानी और विद्वान राजा एक राज्य पर राज करता था उसे बहुत से वेदों और ग्रंथों का ज्ञान था जिस ज्ञान को पाने में उसकी आधी से ज्यादा उम्र बीत गई थी एक बार दरबार में बैठे उसे ख्याल आया कि जिस ज्ञान को प्राप्त करने में मैंने अपना सारा जीवन लगा दिया वह ज्ञान में अपनी आने वाली पीढ़ियों को कैसे दे सकता हूं क्या वो ज्ञान को पाने के लिए इतना समय इन किताबों को दे पायेंगे। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए राजा ने अपनी सभा में विद्वानों को बुलाया और कहा कि इस दुनिया का सारा ज्ञान पुस्तकों में लिखकर मुझे दो फिर क्या था सभी विद्वानों ने अपनी–अपनी समझ से लिखना शुरू कर दिया और पांच साल बाद पांच हजार किताबें महाराज के समक्ष रखी थी। राजा ने किताबें देखी और सोच में पड़ गए कि क्या मेरी आने वाली पीढ़ियां इतनी किताबें पढ़ पाएंगी शायद नहीं ओर राजा ने अपने विद्वानों को आदेश दिया कि किताबों के इस ज्ञान को ओर संक्षेप में करके लाओ फिर क्या था। विद्वान फिर शुरू हो गए और कुछ वर्षों के पश्चात महाराज के समक्ष पांच सौ किताबें पेश की, महाराज ने किताबों को देखा और विचार किया कि मेरी अगर आने वाली पीढ़ियां आलसी हुई और इतनी किताबें नहीं पढ़ीं तो वह अज्ञानी रह जाएगी, तो क्यों न इस ज्ञान को और संक्षिप्त में लिखवाया जाए। फिर क्या था विद्वान फिर शुरू हो गए और कुछ वर्षों के बाद महाराज के समक्ष पचास किताबें प्रस्तुत की पर जैसा कि कहा जाता है काले सिर वाले को संतुष्टी नहीं होती तो राजा के साथ भी कुछ वैसा ही हुआ ओर उसने अपने विद्वानों को उस ज्ञान की ओर संक्षिप्त में करने का हुक्म दे दिया। विद्वान फिर शुरू हो गए और कुछ वर्षों बाद महाराज के समक्ष एक पुस्तक पेश कि ओर कहा कि इसमें पूरी दुनिया का ज्ञान भरा हुआ है। महाराज ने पुस्तक को देखा वह बहुत पतली सी थी जब महाराज ने पुस्तक को खोला तो उसमें सिर्फ एक पेज था और पृष्ट पर केवल एक लाइन लिखी हुई थी **"इस दुनिया में कुछ भी बिना कीमत चुकाए नहीं मिलता"** ये बात राजा को भी समझ में आ गई की ज्ञान चाहिए तो उसकी कीमत तो उसकी आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी। अब वापस अपने टोपिक पर आते हैं कि जब कोई नेता आपके सामने आकर बोलता है बिजली, पानी फ्री, वाईफाई फ्री तब आप उनसे पूछते हो कि क्या ये सब चीजें आपको भी फ्री मिलती हैं अगर नहीं मिलती तो उसके लिए आप पैसे कहां से लाएंगे, वो पैसा ओर कहीं से नहीं कर्ज से लिया जाता है। कर्ज हमारे देश ओर हमारी आने वाली नस्लों को गुलामी की ओर ले जा रहा है। आज हर दूसरा इंसान यही बोल रहा है सरकार सड़क नहीं बनवा सकती, सरकार पानी नहीं दे सकती, सरकार नौकरी नहीं दे सकती। लेकिन कोई ये नहीं सोचता सरकार देगी कहां से? टैक्स आप चोरी करते हो, बिजली आप चोरी करते हो, पानी आप चोरी करते हो, जिसके पास नौकरी है काम नहीं करता, जो काम करता है उसे तनख्वा के साथ रिश्वत चाहिए। जितना देश को आज हम लूट रहे हैं उतना तो मुगल और अंग्रेज मिलकर भी भारतवर्ष को नहीं लूट पाए होंगे। कुछ दिन पहले मैं न्यूज पेपर पढ़ रहा था जिसमें कुछ लोग बोल रहे थे कि मोदी जी ने बोला था कि जो देश का काला धन है वापस आने पर हर किसी के बैंक खाते में 15–15 लाख रुपये आयेंगे जो अभी तक नहीं आ पाये जिस वजह से इस सरकार ने अपना वायदा पूरा नहीं किया। चलो माना काला धन तो वापस नहीं आया इसलिए हम लोगों के बैंक खाते में पैसा भी नहीं आया पर 55 लाख 84 हजार 149 करोड़ का कर्ज हमारे ऊपर है जब तक खाते में 15 लाख नहीं आते मिलकर ये कर्ज उतार लेते हैं। अभी आप लोगों को ये बताना मैं ठीक नहीं समझता कि भारत के हर नागरिक के ऊपर कर्ज कितना है नहीं तो पैरों के नीचे से जमीन निकल जाएगी।

जाट

–मास्टर अजय सिंह गरसा,
गांव बालावास जाट, पो. धारण जिला रेवाड़ी ।

कुछ कहते है कैसा जाट? मैं कहता हूं ऐसा जाट ।।
सबसे भोला भाला जाट, दिल का नहीं है काला जाट ।।
दहेज लेता देता जाट, सब चेते नहीं चेता जाट ।।
नहीं किसी से भय खाता जाट, नहीं किसी को भाता जाट ।।
काम कष्ट में आता जाट, यारी सदा निभाता जाट ।।
अपनों को ठुकराता जाट, गैरों को गले लगाता जाट ।।
झगड़े से नहीं डरता जाट, पीर पराई हरता जाट ।।
औरों का दण्ड भरता जाट, छुआछुत नहीं करता जाट ।।
पर हित के लिए मरता जाट, फिर भी उन्हें अखरता जाट ।।
कब निज हक मांगेगा जाट ।।
कभी नहीं देता धोखा जाट, सदा चूकता मौका जाट ।।
कड़ा सच सदा कहता जाट, डरकर चुप नहीं रहता जाट ।।
नहीं दुश्मन को पहचानता जाट, अपनों से जंग ठानता जाट ।।
नहीं मेल में रहता जाट, यों हानि दुःख सहता जाट ।।
नहीं रण में पीठ दिखाता जाट, देश पर मिट जाता जाट ।।
अत्याचार का सदा विरोधी जाट, कहता बात न बोदी जाट ।।
फिर भी नहीं है चिंतित जाट, भविष्य में बेखबर है जाट ।।
रखता अनुप सब्र है जाट, खुश है सब कुछ खोकर जाट ।।
खाता हर जगह ठोकर जाट, सोया कब जागेगा जाट ।।
कहता है जग जोकर जाट, व्यथित हुआ है होकर जाट ।।

अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ, शब्दों का कर्म से और धर्म का शब्दों से मेल कराओ। –शेक्सपीयर

हाथ–पांव नहीं, फिर भी सफलता के शिखर पर

दो संस्थाओं के प्रमुख 31 वर्षीय निक वुजिकिक के दोनों हाथ और दोनों पांव नहीं हैं।

जन्म से इस विकलांगता से जूझने वाले निक के पास हौसले की कोई कमी नहीं है। पूरी दुनिया में मोटिवेशनल स्पीकर के तौर पर मशहूर निक की कहानी एक मिसाल बन गई है जो लाखों लोगों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बड़ा सवाल यह है कि 10 साल की उम्र में आत्महत्या का प्रयास करने वाले निक ने सफलता की कौन सी कुंजी खोज निकाली जो आम लोगों के पास नहीं है।

आखिर क्या है निक की सफलता का राज :– निक का जन्म ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में हुआ। जन्म के समय ही ना तो इनके हाथ थे और ना ही पांव। माता–पिता ही नहीं डॉक्टर भी अचरज में पड़ गए, क्योंकि इसका मेडिकल सांइस के पास भी कोई जवाब नहीं था। बीबीसी कैपिटल से बातचीत में निक ने बताया, अब तक पता नहीं चल पाया कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ।

बाद में पता चला कि निक टेट्रा–एमेलिया सिंड्रोम नाम की दुर्लभ किस्म की जन्मजात बीमारी की चपेट में आ गए थे।

हालांकि बाएं कूल्हे के नीचे छोटे से पांव के होने से उन्हें संतुलन बिठाने में मदद मिली। लेकिन रोजमर्रा के जीवन में तमाम मुश्किलें थीं, ब्रश करने से लेकर टायलेट जाने तक...

निक हौसले के साथ इन मुश्किलों से जूझते रहे, उनकी मेहनत ने रंग दिखाया। आज वे किसी भी आम इंसान की तरह टाइप कर सकते हैं। अपने अंगूठे के बीच सामान फंसा लेते हैं, गेंद को किक तक कर सकते हैं।

आत्महत्या की कोशिश :– इतना ही नहीं निक रोजाना स्विमिंग करते हैं, पानी की सतह पर सर्फिंग करते हैं और स्काई डाइविंग करने का रोमांच भी उठाते हैं। स्विमिंग के बारे में निक कहते हैं, इससे मुझे नया उत्साह मिलता है, खुद को तरोताजा महसूस करता हूं। लेकिन यह सब इतना आसान भी नहीं था। एक समय था कि वो अवसाद में डूब गए थे। मेलबर्न के जिस स्कूल में पढ़ते थे, वहां के लड़के उनका मजाक उड़ाते थे।

यह सब इतना असहनीय था कि महज 10 साल की उम्र में उन्होंने आत्महत्या की कोशिश की थी। 17 साल की उम्र में उनके हाई स्कूल में सफाई और रखरखाव के इंचार्ज ने उन्हें बहुत प्रेरित किया और सार्वजनिक तौर पर व्याख्यान देने की सलाह दी।

एक सलाह जिसने किस्मत बदली :– निक ने उनके बारे में बताया, मेरी उनसे दोस्ती हो गई थी। उन्होंने मुझे कहा तुम्हें स्पीकर होना चाहिए। मैंने कहा कि मैं क्या बोलूंगा? तो उसने कहा कि तुम्हें अपनी कहानी लोगों को बतानी चाहिए।

इस एक सलाह ने निक की किस्मत बदल दी। उन्होंने पॉजिटिव एटीट्यूड को अपनाना शुरू किया।

तब से निक ने अब तक दुनिया भर में कई व्याख्यान दिए हैं। करीब 50 देशों में बीते 15 साल में निक ने हजारों व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने अपने अनुभवों पर आधारित किताब मेमायर लव विदाउट लिमिट्स लिखी है। निक मौजूदा समय में लाइफ विदाउट लिंब्स और एटीट्यूट इज एटीट्यूड नामक दो संस्थाओं के मुखिया हैं। ये संस्थाएं दुनिया भर में विकलांग लोगों के बीच उम्मीद और भरोसा जगाने की दिशा में काम करती हैं। दुनिया भर के विकलांग लोगों के लिए निक एक उम्मीद की किरण हैं। निक कहते हैं कि विकलांग लोगों को व्हील चेयर देने या उनके लिए कोई इमारत बनाने से बदलाव नहीं आएगा, उन्हें भरोसा देने की जरूरत है कि आप भी कुछ कर सकते हैं।

उम्मीद का भरोसा :– निक कहते हैं, जब दूसरे लोग अपने सपनों को हासिल कर सकते हैं तो हमें भी कोशिश करनी चाहिए। मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करता हूं। हमें जरूर कोशिश करनी चाहिए। निक विकलांग लोगों से अपील करते हैं, कभी कोशिश करने से डरना नहीं चाहिए, नाकामी से डरना नहीं चाहिए और किसी बात के लिए हिचक भी नहीं होनी चाहिए। किसी बात के लिए शर्म भी नहीं करनी चाहिए। निक अब लॉस एंजलिस में रहते हैं, अपनी पत्नी केन और दो साल के बेटे के साथ। इस साल निक दूसरे बच्चे के पिता बनने वाले हैं। साफ है कि जीवन के सफर में तमाम मुश्किलों के बावजूद निक ना तो रूके और ना उन्हें कोई रोक पाया।

धर्म बनाम सम्प्रदाय

धर्म तथा सम्प्रदाय दोनों में मूलभूत भेद है। धर्म का आधार नैतिकता होती है और सम्प्रदाय का आधार किसी व्यक्ति विशेष में निष्ठा और उसके द्वारा बताया गया कर्मकाण्ड! पश्चिम की दुनिया ने धर्म और सम्प्रदाय को पर्यायवाची मान कर घपला पैदा कर दिया। वास्तव में अगर सब सम्प्रदायों में से उनके पैगम्बरों को निकाल दिया जाये तो उनके भेद की सबसे बड़ी दीवार चूरचूर हो जायेगी और वे नैतिकता की समान बातों पर सहमत हो जायेंगे। धर्म मनुष्य जाति को जोड़ता है और सम्प्रदाय मानव को मानव से तोड़ता है। सम्प्रदायवादी केवल अपने सम्प्रदाय को महत्व देता है, वह अपने भिन्न सम्प्रदाय वालों को काफिर और वध के योग्य तक कहने में संकोच नहीं करता। सम्प्रदाय ही मानव जाति के दुश्मन हैं और जब तक इन सम्प्रदायों का अस्तित्व रहेगा तब तक वे मनुष्य जाति को कभी एक नहीं होने देंगे और न कभी शांति से जीने देंगे।

–दरयाव सिंह मलिक

सफला आवश्यक नहीं है, किंतु प्रकाश का अनुकरण करना मेरे लिए आवश्यक है। –अब्राहम लिंकन

आधुनिक नारीः दशा और दिशाएं

डॉ. सुधा जैन

केवल 20 प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षित हैं। इन 20 प्रतिशत में भी 5 प्रतिशत ऐसी हैं तो घरेलू महिलाएं केवल घर, पति और बच्चों को ही समर्पित होकर संतुष्ट नहीं हैं। उनकी बुद्धि को जंग लग जाता है। कुछ न कर पाने की पीड़ा उन्हें हरदम व्यथित और बेचैन बनाये रखती है।

आधुनिक काल में नारी ने जितनी उन्नति और प्रगति की है, इतिहास के पिछले पृष्ठों में कहीं भी उसका इतना व्यापक बहु–आयामी विकास दृष्टिगत नहीं होता। उसकी कार्य–शक्ति की सीमाएं अब तक घर, पति और बच्चों तक ही निर्धारित थीं, किंतु अब वह उन लक्ष्मण रेखाओं को लांघकर युग के रावणों को चुनौती देती हुई पुरुषों के समान ही जीवन के हर क्षेत्र में कार्यरत हैं।

'आधुनिक नारी' से अभिप्राय उन महिलाओं से है, जिन्होंने पुरातन परंपराओं, रूढ़ियों और मान्यता को कम या अधिक नकार कर नवीन विचारों और नयी जीवन पद्धति का अनुसरण किया है। निश्चित रूप से ही इस आधुनिकता का संबंध शिक्षा से जुड़ा हुआ है। विद्या ने नारी मानस के बंद कपाटों को खोलकर अपनी स्थिति की सही पहचान के प्रति उसे जागृत किया है। आज भी भारत में केवल 20 प्रतिशत महिलाएं ही शिक्षित हैं। इन 20 प्रतिशत में भी 5 प्रतिशत ऐसी हैं जो केवल थोड़ा लिखना पढ़ना ही जानती हैं और आधुनिक जीवन दृष्टि से उनका मानस संबद्ध नहीं है। इसलिये केवल 15 प्रतिशत आधुनिक महिलाओं को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं– 1. कामकाजी महिलाएं, 2. समाजसेवी तथा राजनीतिक महिलाएं, 3. घरेलू महिलाएं तथा 4. अति–आधुनिक महिलाएं। कामकाजी महिलाएं :– घर की आरामदेह जिंदगी को छोड़कर महिलाओं को काम करने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? अपने अहम् की तुष्टि के लिये? पुरुषों के प्रति होड़ की भावना से प्रेरित होकर? या अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये? महिलाओं के कार्यक्षेत्र में पर्दापण करने के मूल में कई कारण हैं। कुछ महिलाएं किसी विशेष कार्य के प्रति लगन और दिलचस्पी के कारण उस क्षेत्र में आती हैं जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. आदि। निश्चय ही अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने की चाह तो अपने उपचेतन में रहती ही है। अधिकांश महिलाएं आर्थिक स्तर को ऊंचा करने की दृष्टि से कार्य करती हैं। आत्म–निर्भरता और सुरक्षा की भावना भी उन्हें कार्य करने के लिये विवश करती है। इनके अतिरिक्त एक वर्ग ऐसा भी है जो उपर्युक्त किसी भी भावना से बाध्य न होकर केवल अपने अहम् की तुष्टि के लिये कार्य करने को विवश हैं।

देखने में यह आता है कि बहुत–सी कामकाजी महिलाओं के मन में आर्थिक आत्म निर्भरता और अपने अहम् की प्रतिष्ठा की भावना ही मुख्य रहती है। जो कार्य वे करती हैं उसे वे जैसे–तैसे पूरा करती हैं।

उसमें उनका मन रम नहीं पाता। कार्यालय में बैठे–बैठे उनका मन घर के प्रति चिंतित रहता है। जैसे–तैसे काम पूरा करके वे घर दौड़ती हैं। काम–काजी महिलाओं की यह आम समस्या है कि घर और ऑफिस की दोहरी जिंदगी उन्हें बेहद थका देती है, तोड़ देती है। न वे घर, पति और बच्चों के प्रति ही अपने कर्तव्य को निभा पाती हैं और न अपने कार्य में ही पूरी तरह से मन लगा पाती हैं। यह असंतोष सदैव ही उनके उपचेतन में बना रहता है।

इस समस्या का एकमात्र हल यही है कि महिलाओं के लिए 'पार्टटाइम' (अंशकालीन) कार्य की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वे घर और बाहर की दोहरी जिंदगी के बीच टूटने से बच सकें। दोनों की भूमिकाओं को जिम्मेदारी के साथ निभा सकें। आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर हो सकें, अपने अहम् को भी प्रतिष्ठित कर सकें और मातृत्व व पत्नीत्व की भूमिकाओं को निभाकर भी संतोष अनुभव कर सकें।

यदि पुरुष पत्नियों को पूरा सहयोग दें तो उनके लिये दोहरी जिंदगी को निभाना बड़ा आसान हो जाता है, किन्तु प्रायः ऐसा होता नहीं है। पुरुष नारी के सेवा–भाव का इतना अभ्यस्त हो गया है कि उस सेवाभाव में जरा भी कमी उसे सहन नहीं। यह तो वह चाहता है कि पत्नी भी कार्य करे ताकि इस अत्यंत महंगाई के युग में उसका आर्थिक बोझ कुछ हल्का हो सके, किंतु साथ ही घर–गृहस्थी को भी वह सुव्यवस्थित रूप से चलाती रहे। यह कैसे संभव है? कितनी अनुचित अपेक्षा रखता है पुरुष नारी से; 72 प्रतिशत पुरुषों की यही मनोदशा रहती है। इसीलिये अधिकांश कामकाजी महिलाएं घर और कार्यालय की दोहरी जिंदगी को निभाती तो हैं, किंतु असंतुष्ट, थकी और टूटती रहती हैं। पतियों का सहयोग प्राप्त हो तभी उनकी दोनों भूमिकाओं में सामंजस्य स्थापित होना संभव है।

समाजसेवी तथा राजनीतिक महिलाएं

कुछ करने की भावना तथा कभी–कभी घरेलू जिंदगी से ऊबकर महिलाएं समाजसेवा के क्षेत्र में आती हैं। अपने महत्व को स्थापित करने की इच्छा भी उनके उपचेतन में रहती है। यदि महिलाएं मन और लगन से इस सेवा कार्य में प्रवश्त हों तो पीड़ितों, अपंगों और पिछड़े वर्गों की सहायता करना, उनका देश और समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान होगा। महिलाओं ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किए हैं और कर रही हैं। किंतु अक्सर होता यह है कि कुछ लगनशील महिलाओं को छोड़कर अधिकांश केवल मिलने–जुलने और घरेलू ऊब मिटाने की दृष्टि से ही इसमें आती हैं। कभी–कभी यह सेवा–भावना महिलाओं के सिर पर इतनी सवार हो जाती है कि वे पति, घर और बच्चों

को बिल्कुल ही भूल जाती हैं। पति और बच्चे, पत्नी और मां के सानिध्य के लिए तरसते रहते हैं।

समाज की सेवा कीजिए अवश्य, किंतु इस सीमा में कि घर न टूटने पाए। व्यक्ति से घर बनता है और घर से समाज। अतः घर को टूटने–बिखरने से बचकर व्यवस्थित करना नारी का प्रथम कर्तव्य है। बच्चे ही बड़े होकर समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं, अतः उनके समुचित चारित्रिक विकास की ओर ध्यान देना मां की प्रथम आवश्यकता है। यह सही है कि घर और बच्चों के प्रति जिम्मेदारी केवल नारी की ही नहीं है, पुरुष भी इस कर्तव्य में उतना ही भागीदार है, युगों–युगों से जो दोनों की विभिन्न भूमिका निर्धारित होती आई है, उन्हें बदला नहीं जा सकता। संभवतः दोनों के प्रकृति प्रदत स्वभाव को देखकर ही पूर्वजों ने उनके कर्तव्यों को निर्धारित किया था। धैर्य, सहनशक्ति और ममता के गुणों से विभूषित नारी ही बच्चे का सुचारू ढंग से पालन–पोषण कर सकती है, घर संवार सकती है, पुरुष नहीं। इसके विपरीत पौरुष और शक्ति से पूर्ण पुरुष नारी को सहारा और सुरक्षा प्रदान करता है। दोनों के सामंजस्य से ही यह चलता है। अतः अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना भी संभव हो सके सेवा कार्य कीजिए, परंतु उसकी उपेक्षा करके नहीं।

जहां तक राजनीति और महिलाओं में संबंध है – एक राजनीतिक व्यक्ति का जीवन सार्वजनिक होता है। उनकी दिनचर्या प्रातः से लेकर रात्रि तक लोगों की समस्याएं सुनने, सुनाने, सभाओं में जाने और भाषण देने में ही व्यतीत होता है। उन्हें सांस लेने की भी फुर्सत नहीं होती। उनका जीवन उनके लिए रहकर आम लोगों को समर्पित हो जाता है, फिर पति, घर और बच्चों की ओर ध्यान देने का वहां प्रश्न ही कहां उठता है। आज हर राज्य में महिलाएं एम.एल.ए. और मंत्री हैं। आधुनिक नारी ने आज यह सब कर दिया कि वह शक्ति सामर्थ्य में किसी मायने में पुरुषों से कम नहीं है। राजनीतिक महिलाओं की दिशा और दशा विशिष्ट है।

घरेलू महिलाएं

कामकाजी महिलाएं घर और बाहर की दोहरी जिंदगी के बीच विभाजित होकर टूटती और थकती हैं तो घरेलू महिलाएं केवल घर, पति और बच्चों को ही समर्पित होकर संतुष्ट नहीं है। उनकी बुद्धि को जंग लग जाता है। कुछ न कर पाने की पीड़ा उन्हें हरदम व्यथित और बेचैन बनाये रखती है। अपनी कामकाजी पड़ोसिन को देख–देख कर उनके मन में ईर्ष्या उत्पन्न होती है। अपनी इसी बेचैनी से बाध्य होकर महिलाएं समाज–सेवा के कार्य को अपनाती हैं। उनके अस्तित्व का आखिर कोई तो महत्वपूर्ण योग हो। बच्चे तो सभी पाल लेते हैं। घर की व्यवस्था भी हो ही जाती है। गृहस्थी की गाड़ी को खींचते–खींचते बहुत–सी प्रतिभाएं कुंठित हो जाती हैं। लंबी उम्र पार कर जब उन्हें होश आता है तो जंग लगी प्रतिभा को घिसकर वे चमकाती हैं और घर की चार दीवारियों में से ही कितनी ही प्रतिभाएं उभर आती हैं– चित्रकार, लेखिकाएं आदि।

अतः घरेलू महिलाओं को हताश और निराश नहीं होना चाहिए। अपने अंदर हीनता की भावना नहीं उपजने देनी चाहिए। अपने अंदर हीनता की भावना नहीं उपजने देनी चाहिए। यदि वे अपने बच्चों को ही चरित्रवान बना पाती हैं तो यह राष्ट्र के लिए उनका बहुत बड़ा योगदान है। अपने आत्मसंतोष के लिए भी शासन व अन्य संस्थाओं की ओर से पार्ट–टाईम कार्यों की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे उनकी प्रतिभा, बुद्धि और शिक्षा का सदुपयोग हो सके और वे कुछ न करने की आकुलता से भी मुक्त हो सकें।

उपर्युक्त वर्गों के अतिरिक्त एक महिला वर्ग ऐसा भी है जो अपनी परंपरा और संस्कृति को पूर्णतः नकार कर विदेशी आचार–विचार को अपनाकर स्वच्छंद जीवन व्यतीत करती हैं। इन महिलाओं का सारा ध्यान अपनी देह को सजाने और संवारने की ओर केंद्रित रहता है कि किस प्रकार सिर से लेकर एड़ी तक श्रृंगार–प्रसाधनों से अपने को धो–पोतकर वे सारे समाज को आकर्षित कर सकें। इनकी दिनचर्या का अधिकांश समय क्लबों और पार्टियों में गुजरता है। अपनी सभ्यता और संस्कृति, इन्हें हेय प्रतीत होती है। शराब और सिगरेट का भी ये खुलेआम प्रयोग करती हैं। क्या नारी–जीवन की सार्थकता केवल देह का सजा संवारकर आकर्षित बनाने तक ही सीमित है। जीवन का कोई उद्देश्य या प्रयोजन नहीं है?

देह को सजाइये संवारिये अवश्य, किंतु एक सीमा तक। इतना नहीं कि केवल यही जीवन का एकमात्र उद्देश्य बन जाए। प्रकृति ने नारी को मातृत्व शक्ति प्रदान कर उसे विशिष्टता दी है, किंतु ये महिलाएं देह का सौंदर्य बनाये रखने के लिए मातृत्व की मूलभूत जिम्मेदारियों की भी उपेक्षा करती हैं। अपने बच्चों की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिए न इनके पास समय होता है और न ही इनमें सुचारू विकास की क्षमता होती है। जब स्वयं का चरित्र ही दृढ़ और संयमी नहीं होता तो बच्चों को संवारने का प्रश्न नहीं उठता है इनके बच्चे ऐसे विकसित होते हैं, जैसा बिना काटा–छांटा, बिना कलम किया हआ जंगली पौधा। भले ही वे वेशभूषा से आभिजात्य और सुसंस्कृत लगते हों, पर मन और चरित्र को सुसंस्कृत होना और बात है।

विदेशी सभ्यता की चमक–दमक और ऊपरी आर्कषण ने इस महिला वर्ग को भ्रमित किया है। इन्होंने अपनी परंपरा से पूर्णतः विद्रोह कर गलत दिशा को पकड़ा है। इस प्रकार आधुनिक नारी विभिन्न रूपों में विकसित हुई है। आधुनिकता एक अनिवार्य प्राकृतिक प्रक्रिया है। समय के साथ हर रीति–रिवाज, रंग–ढंग पुराना होता है और उसकी जगह विकसित होते हैं, नये स्तर, नये पहलू। अपनी संस्कृति और परंपराओं में बहुत कुछ त्याज्य है तो बहुत कुछ ग्रहण करने योग्य भी है। किंतु प्रश्न यही है कि किस प्रकार विवेक से त्याज्य को छोड़ते हुए और गृहणीय को अपनाते हुए आधुनिकता का सही प्रयोग किया जाए।

जैसे गरुड़ को देखते ही सब सांप विषहीन हो जाते हैं, वैसे ही गंगाजी के दर्शन से मानव सब पापों से छुटकारा पा जाता है। –महाभारत

सहकारिता का अभाव ही किसानों की दुर्दशा का कारण

Mk- /keZpUn fo|kyadkj

çLrkouk

भारत कृषि प्रधान देश है क्योंकि उसकी परोक्ष जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत आज भी गाँव में निवास करता है। साक्षात् रूप से देखें तो 60 प्रतिशत और परोक्ष रूप से देखें तो 70 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या कृषि–व्यवसाय पर ही निर्भर है। हालांकि यह हमारे लिए कोई गर्व की बात भी नहीं है, क्योंकि एक ही परम्परागत व्यवसाय में इतने बड़े जनगण की सहभागिता अन्ततः उस पर भार ही सिद्ध होती है। इसलिए यह हमारे पिछड़ेपन का भी प्रतीक है। अमेरिका में जब 24 प्रतिशत किसानों की जनसंख्या थी तो निर्धन था, जब उनकी संख्या घटकर कुल चार प्रतिशत ही रह गई थी तो वह एक अमीर देश बन गया था।

संभवतः इसीलिए किसानों के मसीहा और भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरणसिंह बतौर एक अर्थशास्त्री किसानों की संख्या घटाने के प्रबल पक्षधर थे। उनके इस चिन्तन का आधार यह था कि कृषि क्षेत्र में किसानों की बढ़ी संख्या के अनुपात में उत्पादन में वृद्धि नहीं होती। खेत में चाहे दो व्यक्ति काम करें चाहे दस, उसकी उत्पादकता लगभग वही बनी रहती है। फिर वर्तमान मशीनीकरण और यंत्रीकरण ने कृषि कर्मियों की संख्या को कम ही किया है कि आजकल ग्रामीण क्षेत्र की श्रमशक्ति शहरों की ओर द्रुतगति से पलायन कर रही है; जिसके चलते भी कृषि–क्षेत्र में मशीनीकरण की मांग बढ़ी है। जिस अनुपात में कृषि–क्षेत्र इतनी बड़ी आबादी को रोजगार दे रहा है और दो–तिहाई भारतीय जनता का जीवन–यापन वह कर रहा है, उस हिसाब से उसमें निवेश भी नहीं किया गया है। क्योंकि भारत की केन्द्रीय सरकार का नेतृत्व प्रायः कृषिकर वर्ग के शहरियों ने ही किया है। इसलिये ग्रामीण भारत निरंतर उपेक्षा और वंचना का शिकार रहा है।

lgdkfjrk dk egRo

आज कृषि–क्षेत्र में यों तो बहुत सारी समस्याएँ हैं जैसे कि पूँजी निवेश का अभाव, उद्यमिता का अभाव, तकनीकी ज्ञान की कमी, कृषि के व्यापारीकरण का अभाव आदि। हम इन सभी समस्याओं की जड़ में किसानों में सहकारिता की भावना की न्यूनता को ही देखते हैं। क्योंकि ये सहकारी संस्थाएँ बनाकर ही उपर्युक्त क्षेत्र में किसान अग्रणी बन सकते हैं। आजकल लगभग डेढ़ हजार सहकारी समितियाँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। जैसे कि हैफेड और इफको जैसे सहकारी उपक्रमों ने आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का स्थान पा लिया है। आनन्द की 'अमूल डेयरी' दुग्ध उत्पादों की बिक्री में अग्रणी है। हरियाणा और पंजाब में भी आरम्भ में श्वेतक्रान्ति लाने में सहकारी डेयरी संघों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

केवल दुग्ध उत्पादन में ही सहकारिता आन्दोलन का अमूल्य योग नहीं रहा है, अपितु चीनी उद्योग में भी उसकी बड़ी भूमिका रही है। महाराष्ट्र की सहकारी चीनी मिलें आज इस क्षेत्र में मिसाल बन रही हैं। वहीं से राजनीतिक क्षेत्र में आकर कई नेताओं ने राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी मजबूत पकड़ बनाई है। आज महाराष्ट्र की सहकारी चीनी मिलों की अपनी मजबूत लॉबी है जो सरकार पर दबाव बनाकर मूल्यवृद्धि कराती रहती हैं। सहकारी ऋण–समितियों के द्वारा ही हरियाणा और पंजाब में साहुकारों के शिंकजों से कृषक वर्ग ऋण–मुक्त हो सका है। स्वतन्त्रतापूर्व काल में ही चौ. छोटूराम ने संयुक्त पंजाब के विधानमण्डल में जहां पर 'ऋण–विमुक्ति' और मार्किट बिल एकाउन्ट्स रेगुलेशन जैसे सुनहरी बिल कानून बनवाये थे, वहीं पर सहकारी ऋण–समितियों का जाल (नेटवर्क) गाँव–गाँव में बिछाकर किसानों को सस्ती ब्याज दर पर ऋण भी उपलब्ध कराये थे। इसी व्यवस्था में पूंजीवादी साहूकारों की कमर टूटी थी और किसान ऋण–मुक्त हुए थे।

Ñf"k&{k= dk vk/kqfudhdj.k

सहकारिता आन्दोलन को अपनाकर ही हम कृषि–क्षेत्र का आधुनिकीकरण कर सकते हैं। किसान के पास अपना शारीरिक श्रम तो पर्याप्त मात्रा में होता है लेकिन उसी अनुपात मे उसके पास अतिरिक्त पूँजी का संचय नहीं होता। क्योंकि परम्परागत तकनीकों से उसका उत्पादन उतना नहीं बढ़ता है कि वह पूंजी निर्माण कर सके। अतएव सहकारी ऋण–समितियाँ बनाकर वह सस्ती ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर सकता है। उसी पूँजी से वह कृषि का यंत्रीकरण और विद्युतीकरण करके उसका आधुनिकीकरण भी कर सकता है। इससे उसको श्रमिकों की अनुलब्धता की कमी भी दूर हो जायेगी। यद्यपि लागत–व्यय बढ़ जायेगा, लेकिन उसी अनुपात में उत्पादन में वृद्धि के कारण उसकी सकल आय में वृद्धि ही होगी।

आज सिंचाई को फव्वारा प्रणाली ने नखलिस्तानों को भी मरूउद्यानों में बदल दिया है। उसी अधार पर आज हरियाणा के हिसार और भिवानी जैसे जिलों पर हरयाली लहरा रही है। इसी प्रकार से आजकल राजस्थान के बाड़मेर जैसे पिछड़े और रेतीले जिलों में अंगूर और अनारों की फसलें लहरा रही हैं। आधुनिक सिंचाई तकनीकों के कारण ही आज महाराष्ट्र फल–उत्पादन में अग्रणी है। नासिक जैसे जिलों में आज बड़े स्तर पर अंगूर और अनार जैसे मंहगे फलों की खेती की जा रही है, तो नागपुर का संतरा विश्व प्रसिद्ध है। वहाँ के केला और प्याज तो विश्वभर में निर्यात होती ही हैं। मूँगफली और सोयाबीन जैसे नगदी फसलें उगाकर भी किसान अब अपनी आर्थिक स्थिति में गुणात्मक बदलाव ला रहा है। और तो क्या, अब तो मध्यप्रदेश जैसा बीमार राज्य भी महाराष्ट्र के नक्शे कदम पर चलकर सोयाबीन की खेती करने लगा है, अतएवः वहां की कृषि व्यवस्था विकासोन्मुखी हो रही है। हरदा और होशंगाबाद का गेहूँ और सोयाबीन का उत्पादन स्तर तो विश्वभर में उच्चतम है। सहकारी ऋण समितियों से सस्ता ऋण लेकर ही इन किसानों ने सिंचाई के साधन–कुएँ और नलकूप जुटाये हैं। साची की सहकारी दुग्ध समिति का स्वादु दुग्ध आजकल गुजरात की अमूल डेयरी के उत्पादों से टक्कर ले रहा है। पंजाबी किसानों ने बागवानी को अपनाकर अपना रूपान्तरण और कायाकल्प ही कर लिया है।

lLrs cht&[kkn vkSj moZjd

जहां पर सहकारी ऋण समितियाँ बनाकर उनसे सस्ता ऋण पाकर आधुनिक कृषि उपकरण खरीदे जा सकते हैं, वहीं पर सस्ते बीज खाद (उर्वरक) और कीटनाशक भी क्रय किये जा सकते हैं। आजकल इस क्षेत्र में कारगिल और मान्टेसा जैसी बहुराष्ट्रीय निगमों का एकाधिकार कायम हो गया है। पहले किसान अपनी ही उपज से अगली फसल के बीज तैयार कर लेते थे, लेकिन अब इन मुनाफाखोर मल्टीनेशनल ने बढ़िया या टर्मिनेटर बीजों की बिक्री शुरू कर दी है। जोकि एक ओर तो बहुत मंहगी है और दूसरी ओर आगे

गुस्से को शर्बत के घूंट की तरह पी जाओ, क्योंकि जहां तक उसके अंत का संबंध है, इससे अच्छी और कोई आनंददायक वस्तु नहीं है। –अज्ञात

बीज का काम भी नहीं करती है। हर बार किसान को बीज इन्हीं बहुराष्ट्रीय निगमों से मंहगे दामों पर खरीदना होता है। उसके भी उपजाऊ होने का कोई निश्चित भरोसा नहीं है। इन बढ़िया बीजों की बोई हुई फसल खड़ी–खड़ी सूख जाती है। महाराष्ट्र के विदर्भ और आन्ध्र प्रदेश के कपास उत्पादक किसानों को इसी कारण अपनी जीवन लीला समाप्त करनी पड़ी थी, जिनकी संख्या आज हजारों में पहुंच गई है। यही किसान की भाषण विडम्बना है।

कपास उत्पादक किसानों ने सहकारी ऋण समितियों के अभाव में निजी बैंकरों या साहूकारों से छत्तीस प्रतीशत तक के ब्याज पर ऋण राशियाँ उधार ली थी। बी.टी. कॉटन नामक फसल के रोगग्रस्त होने से उसके अधबीच सूखने से उन किसानों के सारे ही सुनहरी सपनों की फसल भी मुरझा गई थी। किसी को पुत्री का विवाह रचाना था तो किसी को पुत्र को डॉक्टर और इंजीनियर बनाना था। किसी को अपना नया घर और घेर बनाना था, या फिर नया ट्रैक्टर खरीदना था। लेकिन बहुराष्ट्रीय निगमों की मंहगी बीजों वाली बीमार फसल ने उनके सारे ही स्वर्णिम स्वप्नों को समाप्त कर दिया था। उल्टे वे ऋणभार से दब गये थे और जीवन भर के लिये निजी साहूकारों के बंधक उनके खेत और घर बन गये थे। ऐसी स्थिति में आत्महत्या जैसा एक मात्र उपाय उनके पास ऋण से मुक्ति का था। यदि महाराष्ट्र और आन्ध्रप्रदेश में भी हरियाणा और पंजाब की भांति गाँव–गाँव में सहकारी ऋण–समितियों का जाल बिछा हुआ होता तो वहाँ के किसानों की यह दुर्दशा कदाचित् नहीं होती।

lgdkjh m|kx&la?kksa dh LFkkiuk

आज इफ्को जैसी सहकारी उर्वरक संस्था ने वैश्विक स्तर पर अपना नेटवर्क बिछा दिया है और वह अन्य बहुराष्ट्रीय निगमों के स्थान पर अपेक्षाकृत रियायती दामों पर ही किसानों को उर्वरक उपलब्ध करा रही है। जिससे कृषि की उत्पादकता में वृद्धि ही हुई है। यद्यपि नब्बे के दशक के बाद जो नव उदारवादी नीतियाँ हमारी केन्द्र सकार ने अपनाई हैं, उनके आधार पर कृषि क्षेत्र से अनुदान राशि या सब्सिडी कम या समाप्त ही की जा रही है। जिसके कारण बीजों की तरह से उर्वरक भी मंहगे हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में सहकारी स्तर पर हमें अवयविक (आर्गेनिक) या कम्पोस्ट खाद उत्पादक–संघों की स्थापना करनी चाहिए, जिससे गोबर और केंचुए की सस्ती खाद उपलब्ध हो सकती है। जिनमें अधिकतर कीटनाशकों की भी आवश्यकता नहीं होती है। दवा कम्पनियाँ भी अधिकतर बहुराष्ट्रीय हैं, जिनका इस क्षेत्र में एकछत्र एकाधिकार है। अतएव वे मनमाना मूल्य वसूलकर किसानों से मोटा मुनाफा कमाती हैं। जहरीली दवाओं से किसान मौत के शिकार भी हो रहे हैं।

सहकारी बैंकों की स्थापना करके किसान जहाँ पर बागवानी या सब्जीकरण करके बहुमूल्य फसलें उगा सकते हैं, वहीं वे कृषि आधारित उद्योग भी स्थापित कर सकते हैं और नहीं तो कम से कम कृषि–यन्त्रों के निर्माण की कार्यशाला और कारखाना तो खोल ही सकते हैं। जैसे कि पंजाब का फगावाड़ा आजकल इस क्षेत्र में अग्रणी है। लेकिन वहाँ पर निजी उद्यमी या निर्माता ही इस क्षेत्र में मुँह मांगे दाम कृषि–उपकरणों के वसूल रहे हैं। कृषि से सम्बन्धित अन्य उद्योग जैसे कि डेयरी उद्योग, मध्ुमक्खी पालन, खादी ग्रामोउद्योग, मत्स्य पालन और खाद्य पदार्थो का प्रस्करण जैसे उद्योग कृषि–क्षेत्र में सहकारी स्तर पर स्थापित हो सकते हैं। क्योंकि सहकारी आधार पर पूंजी की पूर्ति हो सकती है और श्रम की अपूर्ति भी ग्रामीण खेतीहर–मजदूरों से हो सकती है। सहकारी आधार पर स्थापित संस्थाओं और औद्योगिक संस्थानों में दो प्रकार के लोग कार्य करेंगे। एक तो वे जोकि चुनावों द्वारा चयनित निर्देशक मण्डल के सदस्य होंगे। वे अवैतनिक और स्वैच्छिक रूप से परामर्श देकर उनका दिशानिर्देशन करने में अपनी सेवाएँ देंगे। ये लोग पार्टटाइम कार्यकर्ता होंगे। दुसरी ओर पूर्णकालिक कर्मचारी होंगे जोकि इनका संचालन करेंगे, वे वैतनिक होंगे। इस प्रकार से कृषि क्षेत्र में उद्योग (सहकारी स्तर पर) लगाकर हम ग्रामीण क्षेत्र की बेरोजगारी को भी काफी कम कर सकते हैं।

y?k tkrksa dk ,dhdj.k o lgdkjh [ksrh 0;oLFkk

जब सहकारी ऋण समितियों के माध्यम से उद्योगीकरण करके हम अपने कृषि–क्षेत्र को उन्नत और आत्मनिर्भर बना लेंगे तो उसके दो लाभ होंगे। सर्वप्रथम तो ग्रामीण क्षेत्र में मशीनीकरण होने से मजदूर बड़े उद्योगों के लिए मिल सकेंगे। क्योंकि मशीनीकरण या यंत्रीकरण एवं विद्युतीकरण के कारण कृषि–क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या तो घट जायेगी, लेकिन उसी अनुपात में प्रति व्यक्ति या इकाई (यूनिट) उत्पादन क्षमता बढ़ जायेगी। यद्यपि चौ. चरणसिंह और महात्मा गांधी विशेषकर कृषि–क्षेत्र में बड़ी मशीनों के विरूद्ध ही थे। चौ. साहब बड़ी मशीनों की तकनीक को आस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे इन देशों के लिए ही अधिक उपयोगी मानते थे, जिनकी जनसंख्या तो बहुत कम है लेकिन जहाँ पर कृषि की जोतें बहुत बड़ी–बड़ी हैं। अतएव भारत में हम सहकारिता आन्दोलन को अपनाकर कृषि जोतों का एकीकरण करके उनके कलस्टर बनाकर बड़े–बड़े कृषि–फार्म बना सकते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि छोटी जोतें (2 हेक्टेयर से कम) लगभग अलाभकारी होती हैं। क्योंकि छोटी–छोटी जोतों पर न तो किसान बहुमूल्य कृषि उपकरणों को उपयोग कर सकता है और न ही अच्छे खाद तथा बीजों एवं कीटनाशकों का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में सहकारी खाद एवं बीज–भण्डार भी बिक्री के लिए खोले जा सकते हैं।

यहां पर यह कहना गलत नहीं होगा कि अब लघु जोतों वाले सीमान्त किसान सहकारिता के अभाव में ही बड़े–बड़े और खर्चीले ट्रैक्टरों और हार्वेस्टरों का उपयोग कर रहे हैं। जोकि एक सीमान्त किसान के बूते की बात नहीं है। एक ट्रैक्टर जब आराम से बीस–पच्चीस एकड़ कृषि–भूमि की जुताई और बिजाई तथा सिंचाई भी कर सकता है, तब चार या पांच एकड़ वाले किसान उसको मिला कर क्यों नहीं खरीद सकते हैं। जब पम्प सैट या ट्यूबवैल कम से कम 10–12 एकड़ की सिंचाई सप्ताह भर में कर सकता है तो फिर मेंड–2 पर पम्पसैट या ट्यूबवैल लगाकर क्या किसान अपने ऊपर ऋण का बोझ नहीं बढ़ा रहे हैं? यह कहना गलत नहीं होगा कि इन मंहगे उपकरणों को खरीदने के लिए किसान के पास नकद पूँजी–संचय नहीं होती। अतएव वे सरकारी या गैरसरकारी बैंकों से मंहगा ऋण लेकर इनका क्रय करते हैं। ऐसी स्थिति में वे इन उपकरणों की 'दसियों–बीसियों' वर्षो तक मोटी किश्तें भरकर एक प्रकार से पूँजीपतियों और उद्योगपतियों के लिए ही तो कमाते हैं। यदि सहकारी स्तर पर भंडारण की व्यवस्था अपनी उपजों का किसान कर सके तो वे अपनी फसलों का समुचित और अच्छा मूल्य भी प्राप्त कर सकते हैं। भंडारण के अभाव में ही वे सस्ते मूल्य में अपनी फसलों को बेचने को बाध्य होते हैं। अतएव सहकारिता आन्दोलन की प्रत्येक स्तर पर कृषि क्षेत्र में आवश्यकता है। सहकारी मंडी या विपणन की व्यवस्था भी हो सकती है।

Ñf"k ,oa dqVhj&m|kxksa dk lg&lEcU/k

कृषि–क्षेत्र में एक प्रकार से छिपी हुई अर्धबेरोजगारी है।

क्योंकि हमारे देश में मुश्किल से एक या दो फसलें ही किसान उगाते हैं। जो लगभग छः महीनों में पककर तैयार होती हैं। फसल को बोने और काटने में मुश्किल से एक–एक माह का ही समय लगता है। यदि दो महीने कृषि की उपज के बोने और उकेरने से हम निकाल दें तो किसान लगभग 10 महीने तक खाली ही रहते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें लघु एवं कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देना चाहिए। ताकि अपने अवकाशकाल का सदुपयोग करके वे अपनी आय में वृद्धि कर सकें। गांधी जी द्वारा प्रवर्तित बुनियादी शिक्षा इसी प्रकार का एक रचनात्मक और सहकारी उपक्रम था। छोटी–सी पूंजी लगाकर लघु किसान भी अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ कोई भी कुटीर उद्योग खोल सकते हैं; जिसमें उसके बच्चों और महिलाओं की भी सक्रिय सहभागिता संभव है। उदाहरणार्थ कारपेट या गलीचा निर्माण का कार्य ऐसा ही है, जिसमें कम पूंजी और कम स्थान की जरूरत होती है। सारे परिजन मिलकर प्रेम के साथ हंसते–खेलते इस उद्योग में संलग्न रह सकते हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के खुर्जा और पिलखुवा तथा पूर्वांचल के भदोई और ज्ञानपुर जैसे क्षेत्र आजकल गलीचा लघु उद्योग के लिए जाने जाते हैं। सहकारी स्तर पर विपणन संस्थान (मण्डी) बनाकर निर्मित माल का विदेशों तक निर्यात वहां पर किया जा रहा है।

इसी प्रकार से बर्तन–निर्माण उद्योग है। जिसमें मिट्टी के कलात्मक बर्तन और खिलौने बनाये जा सकते हैं। जिस प्रकार से हैंडलूम का स्थान पॉवरलूम ने ले लिया है, उसी प्रकार से बर्तन–निर्माण के क्षेत्र में भी बिजली का चाक अब आ गया है; जिसमें उत्पादन क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। मिट्टी की मूर्तियां और खिलौनों के रबड़ निर्मित सांचे भी बाजार में उपलब्ध हैं; जिनसे सुंदर प्रतिमाएं और खेल–खिलौने बनाकर परिवार की आय बढ़ाई जा सकती है। सूत कातने की तकली और तेल की छोटी घानियां भी पहले ऐसे ही लघु उद्योग थे। अब भी चूड़ी–बिंदी बनाने का काम, मोमबत्ती और चाक भी इसी प्रकार से लघु स्तर पर या सहकारी संस्थाओं द्वारा बनवाये जा सकते हैं और सहकारी स्तर पर ही उनकी बिक्री की व्यवस्था भी बाजार की जरूरतों के हिसाब से की जा सकती है। दूध से निर्मित पनीर और मक्खन से लघु उद्योगों की स्थापना करके आज डेनमार्क (धेनुमार्ग) दुग्ध उत्पादन में विश्व का सिरमौर बना हुआ है। इसी प्रकार से चाकलेट और छोटी–छोटी टोफियां अथवा क्रीम और पाउडर का निर्माण भी सहकारी संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में कराया जा सकता है। हस्तकला या हस्तशिल्प के विकास से किसानों के कला प्रेम और कुशलता में भी विकास होगा। अतः कृषि के साथ–साथ कुटीर उद्योगों का सहसंबंध नितांत अनिवार्य है। जापान और चीन ने ऐसे ही विकास किया है।

Ñf"k&{k= ,d lEi.k vFk&0;oLFkk

कृषि क्षेत्र एक व्यवसाय विशेष ही नहीं है अपितु वह स्वयं में एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है। आज उसमें शासकीय निवेश कम होने के कारण भी यह क्षेत्र पिछड़ रहा है। फिर भी हमें यह नहीं भूलना होगा कि 2008–09 की महामंदी से भी कृषि–क्षेत्र ने भारत को दिवालिया होने से बचा लिया था। लेकिन सरकारों की घोर उपेक्षा के चलते ही आज कृषि–क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में अशंदान हर दिन कम से कम होता जा रहा है। जो हिस्सेदारी केन्द्रीय सकल आय में उसकी कभी चालीस प्रतिशत तक अकेले क्षेत्र की रहती थी, आज यह सिकुड़कर केवल 14 प्रतिशत ही रह गई है। जिन–जिन प्रदेशों में किसानों का सकुशल नेतृत्व रहा है, वहीं पर भाखड़ा बांध जैसी बड़ी–बड़ी सिंचाई परियोजनाओं को कार्यान्वित किया गया है। हरियाणा और पंजाब की समृद्धि का राज वहां पर निरन्तर किसानों का नेतृत्व और उनकी ग्रामोन्मुखी नीतियां ही रही हैं। केवल राज्य से देश का उद्धार होने वाला नहीं। वरना उड़ीसा, बंगाल और बिहार तथा झारखंड ही आज देश में अग्रणी राज्य होते, क्योंकि वहीं पर सबसे बड़े कल–कारखाने सरकारी और गैर–सरकारी क्षेत्रों में लगाये गये हैं।

स्व. चौधरी चरण सिंह ने साबित किया है कृषि केवल एक व्यवसाय भर नहीं है अपितु स्वयं में एक सम्पूर्ण अर्थिक व्यवस्था अथवा संरचना है। क्योंकि कृषि क्षेत्र में पूँजीनिवेश से उसका आधुनिकीकरण या यन्त्रीकरण होने से बड़े उद्योगों के लिए अतिरिक्त श्रम उपलब्ध हो सकता है। सम्पन्न कृषि क्षेत्र और किसान ही उद्योगों के लिए कच्चे माल की उचित आपूर्ति करता है तो उद्योगों के निर्मित माल का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार भी आज गांव में ही है। सम्पन्न किसानों के पास सहकार कृषि–फार्मों और लघु उद्योगों के माध्यम से उनकी आय में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त पूँजी निर्माण होगा, उसी से आगे चलकर औद्योगिक या व्यापारिक और वित्तीय पूंजी का निर्माण होगा, जिससे व्यापारीकरण और औद्योगिकरण का प्रोत्साहन मिलेगा। सहकारी स्वयं सहायता समूह भी पूँजी–संग्रह कर सकते हैं। आजकल की बड़ी–बड़ी कॉरपोरेट मिलें खोल रही हैं। आखिर निजी लिमिटेड कम्पनियां संचालक और संयोजन में भी कम से कम बीस–बाईस लोगों की सांझेदारी या सहभागिता तो होती है, अतएव सहकारिता निजी क्षेत्र में भी उपयोगी है।

यदि हमारा कृषक समुदाय पुनः सहकारी आन्दोलन को अपना ले तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान सहजता से हो सकता है। उससे सस्ती ऋण राशि और सस्ते बीज–खाद एवं उर्वरक सहकारी विपणन संस्थाओं से मिल सकते हैं। यही नहीं, आधुनिकीकरण और यन्त्रीकरण से कृषि का व्यापारीकरण या बाजारीकरण होने से नकदी फसलों से उनकी आय में वृद्धि होगी। उनकी बेरोजगारी दूर होगी और उनके जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार आयेगा। अतएव आज छोटी जोतों और अल्प पूंजी के चलते सहकारिता ही उनके सामने एकमात्र विकल्प बचता है, जिसको अपनाकर किसान अपनी आय में वृद्धि और जीवन दशाओं में सुधार कर सकते हैं।

lanHkZ lwph

1- भारत की अर्थनीति : चौधरी चरणसिंह किसान ट्रस्ट दिल्ली।
2- भारत की भयावह आर्थिक दशा : कारण और निदान : चौ. चरणसिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली।
3- ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था और सहकारी आन्दोलन, डॉ. सुभाष यादव : *Rural Development & Coperative Movements* का हिन्दी अनुवाद : प्रकाशक पेंगुइन बुक्स, दरियागंज, दिल्ली–2
4- सहकारिता आन्दोलन और आर्थिक विकास : चारू मजूमदार, सस्ता साहित्या मण्डल, वाराणसी
5- डॉ. बलराम जाखड़ का जीवन–चरित्र।
6- क्रान्तिकारी और सक्रिय राजनीति : डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार वीर साहित्य प्रकाशन, पलवल।
7- स्वदेशी सम्राज्यवाद : डॉ धर्मचन्द्र विद्यालंकार, वीर साहित्य प्रकाशन, 101 गली कन्दले किसान, दिल्ली।

मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और मिथ्या भाषण को सत्य से जीत सकता है। –गौतम बुद्ध

पछादे (पंजाबी) जाट एक परिचय

राकेश सरोहा

किसी भी देश अथवा जाति की पहचान उसके इतिहास से मिलती है तथा उस जाति की प्रगति का आधार भी उसका इतिहास होता है। जिस जाति के लोग अपना इतिहास भूल जाते हैं उनकी संस्कृति धीरे–धीरे समाप्त होती जाती है तथा उस जाति का नैतिक पतन हो जाता है। भारत की एक महत्वपूर्ण जाति जाट जाति है। जिसके लोग अपनी वीरता, मेहनत तथा स्पष्टवादिता के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने अपने मेहनत से समाज में महत्वपूर्ण तथा सम्मानीय स्थान बनाया है। जाट जाति के लोग मुख्यतः पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, दिल्ली तथा हरियाणा में निवास करते हैं तथा अन्य जातियों की तरह जाटों में भी कई उपजातियां हैं। जिन्हें सिख जाट, देसवाली जाट, बागडी जाट, मारवाडी जाट, पछादे जाट, हेले जाट, वैष्णव जाट तथा अन्य जाटों के नाम से पुकारा जाता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा के फरीदाबाद जनपद व उत्तराखण्ड के कुछ भागों में जाटों का एक ऐसा वर्ग निवास करता है। जिन्हें पछादे या पंजाबी जाट कहा जाता है। ये जाट लगभग 250 वर्ष पूर्व पश्चिम (पंजाब) से आकर यहां बसे थे इनमें से अधिकतर सिख जाट थे। उस समय दिल्ली के आसपास के क्षेत्र के हिंदु, मुस्लिम शासकों की सेना तथा असामाजिक मुस्लिम तत्वों से परेशान थे तथा उनका जुल्म सहने को मजबूर थे। मुस्लिम आतंकवाद से ग्रस्त यहां के हिंदुओं ने तब श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पास जाकर उनसे हिंदु हितों की रक्षा करने का अनुरोध किया था तब गुरु गोबिंद सिंह जी के आदेश पर बाबा बघेल सिंह ने अपने साथ 12 हजार योद्धाओं की सेना लेकर मुस्लिम आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों (दिल्ली के आस–पास) की तरफ कूच किया। इस सेना में अधिकतर सिख जाट थे तथा कुछ नाई तथा ब्राह्मण जातियों के लोग भी थे। बाबा बघेल सिंह की सेना ने मुस्लिम आतंकवाद से प्रभावित मेरठ, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुज्जफरनगर, गाजियाबाद, फरीदाबाद, बिजनौर तथा बरेली के क्षेत्रों में मुस्लिम आतंकवाद का सफाया कर दिया। बाबा बघेल सिंह की सेना में से 2000 के करीब योद्धा शहीद हो गये थे तथा बाकी योद्धाओं को बाबा बघेल सिंह ने लंबे समय तक इन क्षेत्रों में रहने का आदेश दिया ताकि मुस्लिम आतंकवाद यहां पुनः सिर ना उठा सके। बाबा बघेल सिंह के आदेश पर ये सिख जाट सैनिक इन क्षेत्रों में स्थायी रूप से बस गये तथा इसके पश्चात इसके रिश्तेदार भी उन क्षेत्रों में अच्छी कृषि भूमि देखकर यहां आ बसे।

इन पंजाबी जाटों तथा पहले से बसे स्थानीय (देसवाली) जाटों में आपसी उठ–बैठ होने में काफी समय लग गया। दोनों जाटों में लंबे समय तक मित्रतापूर्ण संबंध नहीं बन पाये थे। ये पंजाबी (पछादे) जाट शुरू में लंबे बाल तथा दाढ़ी रखते थे तथा अधिकतर पंजाबी भाषा का प्रयोग करते थे। ये पछादे जाट शुरू से दबंग स्वभाव के थे जिसके कारण स्थानीय जाट इन्हें पसंद नहीं करते थे। धीरे–धीरे पछादे जाटों ने अपने–अपने क्षेत्रों में अपने आप को अपनी मेहनत तथा व्यवहार कुशलता से स्थापित करना शुरू कर दिया तथा समय के साथ–साथ आर्थिक प्रगति करते चले गये। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज से प्रभावित होकर ये सिख जाट (जिन्हें पंजाबी या पछादा जाट कहा जाता था) वेदिक धर्मी हो गये तथा आज इन पछादे जाटों में 95 प्रतिशत हिंदु जाट तथा 5 प्रतिशत सिख जाट हैं। आर्य समाजी बनने के पश्चात धीरे–धीरे पछादे जाटों तथा स्थानीय देसवाली जाटों में मित्रता पूर्ण संबंध बनते चले गये जो बाद में रिश्तेदारियों में बदल गये तथा वर्तमान समय में इनमें रोटी तथा बेटी का रिश्ता मजबूती से कायम हो चुका है। पछादे जाटों का आगमन क्योंकि पश्चिम (पंजाब) से हुआ था इसलिए इन्हें पंजाब जाट भी कहा जाता है। हरियाणा के सोनीपत, रोहतक, पानीपत तथा लोहारू के क्षेत्र में रहने वाले जाटों को भी कई जगह पछादे जाटों के नाम से पुकारा जाता है। परंतु ये वास्तव में देसवाली जाट कहलाते हैं। पछादे (पंजाबी) जाट वास्तव में फरीदाबाद, मेरठ, मुज्जफरनगर, सहारनपुर, मुरादाबाद, हापुड़, बिजनौर तथा उत्तराखण्ड के बहुत से गांवों में बसने वाले जाट हैं। जिनके पूर्वज सिख जाट थे तथा वे पंजाब से आकर यहां बसे थे इन सिख जाटों की अगली पीढ़ियां धीरे–धीरे आर्य समाज से प्रभावित होकर हिंदुओं में परिवर्तित हो गयी हैं तथा इन्हें अब पछादे (पंजाबी) जाट कहा जाता है। आज ये पछादे जाट समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं। इन जाटों में आज छोटे स्तर से लेकर उच्च स्तर के राजनेता, पुलिस तथा सैन्य अधिकारी, व्यवसायी और बड़े जमींदार हैं। इन पछादे जाटों के बारे में कुछ जानकारियां निम्न प्रकार से हैं:–

पछादे जाटों के प्रमुख गोत्र :

चहल, सिधू, गिल, धारीवाल, ग्रेवाल, बराड़, टिवाना, ढिल्लों, ओलख, दयोल, रंधावा, मान, चट्ठा, निर्वाण, बिसला, सराव, गोदारा, ऊंटवाल, सिरोही, गुलिया, सेखों, महल, मुंढेर, कालेर, गहलोत, देव, पंवार, सिवाग, पूनिया, नेहरा, चीमा, कंग, विर्क, कुहाड़, सिंधु, भुल्लर, घुम्मन, बाजवा, अहलावत आदि पछादे (पंजाबी) जाटों के प्रमुख गोत्र हैं तथा इनमें चौधरी तथा सरदार की उपाधि का प्रयोग गर्व से किया जाता है। वैवाहिक संबंधों में माता व पिता का गोत्र छोड़ा जाता है।

जनसंख्या :

पछादे जाटों की जनसंख्या 5 लाख के करीब है तथा ये प्रमुख रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा के कुछ भागों में तथा उत्तराखण्ड के जाट बहूल वाले क्षेत्रों में प्रमुख रूप से निवास करते हैं। ये भारत की कुल जाट आबादी का करीब 2 प्रतिशत हैं तथा इन पछादे जाटों की कुल जनसंख्या में 95 प्रतिशत हिंदु धर्मी तथा 5 प्रतिशत सिख धर्मी हैं। परंतु इनमें हिंदु या सिख होने का कोई भेदभाव नहीं

है तथा पछादे सिख जाटों तथा पछादे हिंदु जाटों में आज भी वैवाहिक संबंध बने हुए हैं। पछादे जाटों के कुछ प्रमुख गांव के विवरण इस प्रकार हैः–

प्रमुख गांव : पछादे जाटों के हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखण्ड में 500 से अधिक गांव हैं जिनमें ये निवास करते हैं। इनके कुछ प्रमुख गांवों का विवरण इस प्रकार हैः– दयालपुर, बुखारपुर, ताजोपुर, बदरपुर सैद तथा बहादुरपुर ये सभी गांव फरीदाबाद जनपद में हैं। अलमगीर पुर (मेरठ), छबडिया (सरधना), पनियाली काश्मिपुर (सहारनपुर) पावटी (हापुड़) खाण्डपाल (अमरोहा) खाण्डसाल (मुरादाबाद) ऐतमादपुर (मेरठ) श्यामपुर (हापुड़) गंडुनगला (हापुड़), फूलढेरा (हापुड़) अटोला (हापुड) श्यामपुर जाट (हापुड) बहादुरपुर मवाना (मेरठ), धासुपुर (मेरठ), बिहोलपुर (मेरठ) दानुपर (अमरोहा), वीरपुर (हापुड़) अकडोली (हापुड), आयादनगर, दिदारा, कनिया (हापुड़), बसेदा (बिजनौर), रवेडा मुगल (सहारनपुर), मीरपुर, लालपुर (हापुड़), पुपसारा (अमरोहा), छबकोली (हापुड़) नवादा कला (हापुड) धंजु (मेरठ), तुगलकपुर (मुज्जफरनगर), सादुलपुर (हापुड़) राहवटी (मेरठ) भगवानपुर (हापुड़) महबाईलपुर (मुज्जफरनगर), बिश्नपुर (सहारनपुर) सिंभावली (हापुड़), ततारपुर (हापुड़), फतेहपुर (मेरठ) मलखपुर (हापुड़) जैनपुर (मेरठ), नंगली किठोड (मेरठ), बढला (मेरठ) मसंव नगला (मुज्जफरनगर) छोटीपुरा (अमरोहा) कैसला (अमरोहा) इसापुर (अमरोहा) जमालपुर (अमरोहा) नरथो (अमरोहा) सिरसा मोहन (अमरोहा) बारसपुर कलां (अमरोहा) बरकटपुर (बिजनौर) दासपुर (अमरोहा) बछडोता (हापुड़) अक्खापुर (हापुड़) अमीरनगर (मुज्जफरनगर), मुरादपुर (हापुड़) व टिकोला (मुज्जफरनगर), रसूलपुर (हापुड़) बास बलडाना (अमरोहा) सिंघपुर (संभल) आदि पछादे जाटों के प्रमुख गांव हैं। इसके अतिरिक्त भी पछादे जाट (पंजाबी जाट) बहुत से गांवों में निवास करते हैं।

भाषा : पछादे (पंजाबी) जाट जहां–जहां भी बसे हुए हैं, वे वर्तमान समय में स्थानीय भाषा (हिंदी) का प्रयोग करते हुए उसमें पंजाबी भाषा का मिश्रण कर देते हैं। इस प्रकार वे पंजाबी मिश्रित हिंदी भाषा (स्थानीय) भाषा का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार अधिकतर पछादे जाट पिता को बापू माता को अम्मां, बहन को बेबे तथा भाई को भाई मौसी को मासी तथा दामाद को पाहमना (मेहमान) कहकर संबोधित करते थे परंतु वर्तमान आधुनिक समय में इनके भाषा और संबोधन में परिवर्तन आ गया है तथा ये शुद्ध स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त ये अपने आप को पंजाबी जाट कहलाने में गर्व महसूस करते हैं।

खाप व्यवस्था : पछादे (पंजाबी) जाटों में खाप व्यवस्था का अभाव है तथा सामाजिक विवादों का अधिकतर निपटान ये बक्खल (पाना) की पंचायत के माध्यम से करते हैं यदि विवाद अत्याधिक बढ़ जाये तो उसका निपटान ग्राम पंचायतों के माध्यम से भी करते हैं। यदि जाटों का विवाद अन्य जातियों से हो जाये तो जाटों के मान–सम्मान के लिए मर मिटने के लिए भी तत्पर रहते हैं।

त्यौहार तथा प्रथा : पछादे जाट दीपावली/दशहरा तथा तीज का त्यौहार विशेष उत्साह से मनाते हैं तथा तीज पर विवाहित बहन बेटियों को सिंधारा भेजने की प्रथा आज भी कायम है। इसके अतिरिक्त दशहरे पर विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन उत्साह से किया जाता है। हिंद केसरी पहलवान नेत्रपाल (दयालपुर) इस दंगल की ही देन थे।

रहन–सहन तथा जीवन स्तर : पछादे जाटों का रहन–सहन अन्य जाटों की तरह ही साधारण है तथा अधिकतर पछादे जाट गांव में ही निवास करते हैं। इनका प्रमुख कार्य कृषि करना है। कृषि के अतिरिक्त ये पुलिस, सेना तथा सरकारी नौकरी में जाना पसंद करते हैं। दिल्ली पुलिस में जाने के लिए अत्याधिक उत्साहित रहते हैं। इनका खान–पान शुद्ध देसी है तथा ये घी, दूध, दही को बहुत पसंद करते हैं। देसवाली जाटों के साथ–साथ इनके संबंध मित्रतापूर्ण हैं तथा देसवाली व पछादे (पंजाबी) जाटों में आपस में वैवाहिक रिश्तेदारियां भी हैं, जिसके कारण वर्तमान समय में पंजाबी जाट, देसवाली जाटों के साथ अपने आप को स्थापित कर चुके हैं। प्रारंभ में पछादे व देसवाली जाटों में समन्वय स्थापित नहीं हो पाया था परंतु धीरे–धीरे पछादे जाटों ने अपनी मेहनत तथा व्यवहार से आर्थिक संपन्नता को प्राप्त कर लिया तथा अब इनमें व देसवाली जाटों में कोई अंतर नहीं रह गया है। पछादे जाट स्थानीय जाटों की तुलना में अधिक व्यवहार कुशल तथा मेहनती थे। जिसके कारण आज इनकी आर्थिक स्थिति काफी बेहतर है। इसके अतिरिक्त पछादे जाट असला (हथियार) रखने तथा चलाने में विशेष रूचि रखते हैं।

धर्म : पछादे (पंजाबी) जाट हिंदु तथा सिख धर्म का, मंदिर व गुरुद्वारा का समान रूप से सम्मान करते हैं तथा अधिकतर पछादे जाट राधा स्वामी पंथ को मानने वाले हैं। इनमें धर्म के स्थान पर जातीय भावना अधिक है।

विशेष : पछादे (पंजाबी) जाटों का आगमन चाहे पश्चिम (पंजाब) से हुआ था परंतु वर्तमान समय में इनका पंजाब से ना तो कोई संबंध ा है तथा ना ही पंजाब में कोई रिश्तेदारियों हैं तथा ना ही इनका पंजाब से कोई लगाव है। ये अपने वर्तमान जन्मभूमि को ही अपनी कर्मभूमि मानते हैं। इस प्रकार पछादे जाट आज जाट समाज के महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं। जाट समाज की यह विशेषता है कि इसमें जाटों में क्षेत्र या भाषा के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है तथा सभी जाटों का समान माना जाता है। वर्तमान समय में पछादे जाटों ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की है तथा जाटों की नकारात्मक छवि को समाप्त करके जाटों की प्रगतिशील तथा सकारात्मक छवि को प्रस्तुत किया है। प्रसिद्ध कवि संत गंगादास तथा प्रसिद्ध आर्यसमाजी स्वामी स्वतंत्रतानन्द सरस्वती (सरोहा गोत्री जाट) दोनों पंजाबी जाट थे। जिन्होंने जाटों के सम्मान को बहुत बढ़ाया था। वर्तमान समय में भी पछादे (पंजाबी) जाट आरक्षण व जाटों की समस्याओं के निवारण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

Brief History of Dalas of Bulandshahar District

Dr. Har Swarup Singh

Some members of our clan (gotra) moved from Mandothi, near Rohtak, Haryana (Punjab at that time) to Chistsons Alipur (Tisona) in District Bulandshahar, U.P. perhaps during the region of Ahmed Shah in the 1650s (?) During the reign of Moghul Emperor Shah Alam the II or III (1750-1793), the Jat ruler at Kuchesar was given the title of 'Rao Raja' and 'Chor-Mar' perhaps becouse he has killed serval decoits, who had managed entry into residentail quarter, single handedly. Capt. Kr. S.P. Singh of Kuchesar, who later shifted to Meerut, and Kr. Vikram Jit Singh at Kuchesar may have photocopies of that **'Shahi Firman'** among other documents. The leader of the Mandothi 'Kafila', Ch. Bhiwal Singh, was accompanied by his own Pandit, barber, carpenter, sweeper, etc. In addition to his troops. One branch of the 'Kafila' went to Bijnor-led by the brother of Bhiwal Singh becouse Bhiwal Singh's wife is resported to have said "Jeth ji, gadi thodi farakati chhonde, jo parda na karna pade". So Jeth Ji was 40-50 miles away to Bijnor district! Dr. Alok Singh of that family emigrator to Northern Virginia, U.S.A.

Ch. Bhiwal Singh builta 'garhi' (fortress) at Chitsona Alipur. Our 'gher' (ahata) area is still called **'garhi'.** Until recently one 'burj' (guard tower) was intact; a small mound is still there. The 'garhi' was planned properly; at the cormers lived the barber, the carpenter, the blacksmith, etc. Some of them are still living there although the original settlement was disturbed as per dictates of increased living requirements or other needs. In the village, a Shivalaya and Thakurdware was established which still exist. The Thakurdwara had a land grant of 60-70 bigha which yielded enough maintenance.

At the time of arrival of Dalas, Chitsona was inhabited by Pathans and some Tyagis. Pottery utensils and other household items and statues, etc. of the Pathan days are still found at the time of digging in the 'Khera' area close to our 'gher'. It was rumoured that a couple of people had found gold coins, jewwllwry and precious stones while digging foundations for their houses and they suddently got very rich Ch. Bhiwal Singh's group ousted the original inhabitants after some fighting; bows and arrows were the weapons used first, follow by close combat using swords.

Ch. Rai. Singh (son of Ch. Bhiwal Singh) and his nephew Jai Singh were involved in the famous fight with the Rajputs at Pushkar in Rajasthan (during late 1760s). They were brave army allies/officers of Bharatupur. By tradition the Rajput Rainis used to bathe first at the annual mela at Pushakar but, with the ascendency of the Jat power under Maharaja Surj Mal RaniRoop Kaur (aunt of Maharaja Jawahar Singh) wanted to take the first dip in Pushkar lake. Jai Singh and other ensured this but only after a fierce battle under the leadership of Jawahar Singh one of the braves (albiet a bit rackless) fighters. The Rajput kingh was killed in the battle by Rai Singh. In recognition, Bharatpur awarded or recognised the claim of the Chitosana Dalas over 360 villages of Bulandshahr district. I presume by that time Kuchesar State had been established by the Chitsona Dalas after some gallant fighting. While the accounts of bravery are true, its degree was undoubtedly exaggerated by our 'Doms' who used to narrate the history or sing in praise of our farefathers.

The fort at Kuchesar was captured by the Dalas from a Bania, Seth Kanchan Sahai. It was turned into a very large fort indeed. I found it truly impressive during my boyfood visit. The elephants and horses lent a regal air. Inside, many modern houses had had been constructed. I also saw a couple of European Governesses in the Dalals had captured a small fort at B.B. Nagar owned by Bahadur Shah/Jehangir Shah. Ch. Dhandya Singh was the commemder in the battle at B.B. Nagar and Kuchesar. Kuchesar later built a satellight fort at Sahanpur (near Syana and Chitsona) which was later given in dowry along with 12 villages to a Tewatia Zamindar.

It is said that Ch. Dhandya Singh betrayed his brothers and other after some time. The brothers were put in a cellar and tortured until they gave up their rights to Kuchesar Sate. They were given 12 villagers instead. For the main members of the clan even the revenue was waived off. In our village, the inhabitants of two 'mohalls' were granted this right ('Chauhara' grant) and are called Chauhare 'wallas' (our mohalla and murre's). The Dalals of Chitsona were thus settled in 12 villagers and, of course, Kuchesar became the new seat of power in place of the original Chitsona Alipur Garhi.

The Dalals Villages in Bulandshahr District. (the original 12 plus some more which the Dalals bought) the whole village or some land and settled over there are: Chitsona Alipur, Sega, Mahav, Segli, Chingraothi, Pipala, Tibra, Bindra, Mandona, Sonjana, Karkira, Gangaharim Ladpur, Moondi, Loharu, Razapur, Kurana, Bharna.

Villages Razapur and Bharna were bought by the forefather of Ch. Giri Raj Singh and hari Raj Singh (the next generation 0the Badis of Meerut). Ch. Rai Singh's progeny remained in Chitsona. Mandona and Gangari are inhabited by the descendents of Ch. Shankar Singh; and mahav by the descendents of Ch. Pop Singh (the Murre's of Chitsoana are also his descendents).

The Dalals of Bulandshahr district came from the Guru Datt family of Mandothi, Mantaria Pana. I saw the old 'Chaupal' on my first visit to our original

village in 1988, soon after joining as Vice Chancellor at CCS-Haryana Agriculture University, Hisar. This is the biggest 'Chaupal', located near the house of Ch. Ram Kala in the centre of the village. Some of the other names from Mandothi thet our family in Chitsona remembers are: **Sohan Singh, Asa Ram, Har Gobind Singh, Sada Ram, Hans Raj Singh, Bharat Singh, Ram Dhan Singh, Har Swarup Singh, Jage Singh.**

We certainly recycle the names! My father was also named Bharat Singh. My mother's cousin, Bhagirathi, from village Tanaija, near Rabupura in Bulandshahr District, was married to Ch. Bharat Singh of Mandothi.

The above information is based largely on the recollection of the last knowledgeable 'Dom' in our village. Obviously, the details are sketchy, especially about earlier generations. I am writing to a number of Dalals and other Jats to provide comments, information and documents, if available, relating to our history. I propose to use this information for writing the first two chapters of my memories dealing with the Jats and the Dalal Clan.

Note : The above details were available with Shri Sukhbir Singh Dalal of Hotel Vandana, Paharganj, New Delhi. Obviously Dr. Swarup Singh sent this information sometime during 1996 to Mr. S.S. Dalal and others for solicting supplementary information from others.

शोक समाचार

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के उपप्रधान श्री सुखबीर सिंह मलिक का 75 वर्ष की आयु में 15 नवम्बर 2015 को उनके पैत्रिक गांव भैंसवाल कला जिला सोनीपत में निध न हो गया। जाट सभा की कार्यकारिणी द्वारा शोक प्रस्ताव पारित करके उनके निधन पर शोक व्यक्त किया गया। अपने शोक सन्देश में सभा के प्रधान डॉ० एम०एस० मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत) ने कहा कि सुखबीर सिंह मलिक जाट सभा के एक कर्मठ व वरिष्ठ आजीवन सदस्य थे जो कि एच.एम.टी. लिमिटेड पिंजौर में एक अत्यन्त परिश्रमी, ईमानदार व दंबंग छवि के अधिकारी रहे है ।

जाट सभा का समस्त परिवार उनके दुखद निधन पर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शोक सतप्त परिवार को इस असहनीय आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl 36/5'3" B.Tech.working in Chandigarh Company. Divorsed, Avoid Gotras: Malik, Pawar. Cont.: 7508296284*
- *SM4 Jat Girl 12.10.1992/5'1" B.A, B.B.A., B.Ed. doing M.A. Avoid Gotras: Lakara, Pawar, Tomar. Cont.: 9872100042, 9216000072*
- *SM4 Jat Girl 01.01.1990/5'3" 12th, GNM working Staff Nurse in Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657*
- *SM4 Jat Girl 29/5'2". M.Sc. (Hons.) PU Chandigarh. Working as P.O. in Nationalized Bank. Trycity Match preferred for Family settled at Panchkula. Avoid Gotra: Sangwan, Khatri, Siwach. Cont.: 9466951525.*
- *SM4 Jat Girl 25/5'9". M.A. Economics doing B.Lib. Avoid Gotra: Hooda, Malik, Khatre. Cont.: 9417529417.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.12.86) 28.10/5'5" BCA., MCA, Employed as Lecturer in a reputed College at Sampla, Distt. Rohtak (Haryana) Avoid Gotras: Pawaria, Nandal, Ahlawat. Cont.: 09811658557, 09289822077*
- *SM4 Jat Girl (DOB18-12-86) 28.10/5'4" MSc. Physics, M.Phil Physics Employed as Contractual Lecturer in a Govt. College, Chandigarh. Father in Government service. Avoid Gotras: Bhedas, Jatian. Cont.: 09991659094, 09416499094*
- *SM4 Jat Girl 25.6./5'6" B.Sc. Hons. Math with Computer, M.Sc. Math Hons., from Punjab University Chandigarh. B.Ed., C.TAT, H.TAT cleared. Teaching in Bhawan Vidyalaya, Sector 15 Panchkula. Avoid Gotras: Rathi, Mann, Dhanda. Cont.: 09815253211*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'8" B. Tech. Working as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father and mother Gazetted Officers in Haryana government. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha Cont.: 09988701460, 09855126285*
- *SM4 Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in ORACLE Co. at Banglore with Rs. 7 Lac package PA. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal Cont.: 09417629666*
- *SM4 convent educated Jat Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan. Cont.: 09888734404, 09466359345*

छाया घूंघट डालकर प्रेम की मौन गति से, विनीत भाव से प्रकाश का अनुसरण करती है। –रवींद्र नाथ ठाकुर

सब्जियाँ औषधियाँ भी हैं।

सब्जियाँ में प्रोटीन, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट्स एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में होते हैं। इनमें पीलिया, मधुमेह, पाचन तन्त्र के रोगों को दूर करने के औषधीय गुण होते हैं। किन सब्जियों में किस तरह के औषधीय गुण होते है। किन सब्जियों में औषधीय गुण होते हैं इसी से सम्बधिंत जानकारी यहां प्रस्तुत है :-

आलू :- आलू में पोष्टिक कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामीन बी काम्पलेक्स एवं खनिज तत्व (आयरन, कैलशियम एवं फास्फोरस आदि) प्रचुर मात्रा में होते हैं। आलू की पतियों का रस पीने से कफ एवं बलगम मिटता है। आग से जलनें पर इसके कदों को पीसकर जले हुए स्थान पर लेप करने से काफी आराम मिलता है। कभी-कभी चोट लगने पर नील पड़ जाता है। इस पर कच्चा आलू पीसकर लगाने से फायदा होता है। सर्दी में हवा के कारण हाथों पर कच्चे आलू को पीसकर मलने से झूरियाँ ठीक हो जाती है।

अरबी :- अरवी के रस का सेवन करने से उच्च रक्तचाप कम होता है। ह्रदय रोगी को प्रतिदिन २३ ग्राम अरबी की सब्जी का नियमित सेवन करना चाहिए। अरबी के तने व पतियों का रस उबालकर तीन दिन तक घी के साथ मिलाकर लेने से पेट दर्द एवं कब्ज दूर होता है। इसकी जड़ों की राख में शहद मिलाकर लेने से मुँह आना ठीक होता है।

जिन व्यक्तियों के पेट में गैस बनती है, गाठिया और खांसी हो उनके लिए अरबी हानिकारक होती है।

टमाटर :-टमाटर में विटामीन सी की मात्रा अधिक होती है। इसका उपयोग दमा एवं खासी के लिए फायदेमंद होता है। सुबह नाश्ते में एक टमाटर के रस में थोड़ा शहद मिलाकर पीने से चेहरे की रंगत में निखार आता है। कच्चा टमाटर खाने से त्वचा खुश्की दूर हो जाती है, मधुमेह एवं आंखों के रोग (रतौंधी) में यह बहुत फायदेमंद होता है। मधुमेह रोग में टमाटर की खटाई शरीर में शर्करा की मात्रा को कम करती है, जिससे मूत्र में शक्कर जाना धीरे-धीरे कम हो जाता है।

प्याज :- गर्मियों में इसके उपयोग से लू नहीं लगती। इसकी सब्जी का प्रयोग करने से शरीर की गर्मी दूर हो जाती है। कान में दर्द होने पर इसके रस को हल्का गर्म करके डालने से दर्द में फायदा होता है। इसे कीड़ो के काटने, बिच्छू द्वारा डंक मारने से उत्पन्न जलन को शांत करने में प्रयोग किया जाता है। प्याज का प्रयोग तम्बाकू के नशे को दूर करने के लिए किया जाता है। प्याज का रस और सरसों के तेल का बराबर मात्रा में मिलाकर लगाने पर गाठिया दर्द एवं सूजन में फायदा होता है। प्याज को सिरका में पकाकर प्रयोग करने पर तिल्ली (प्लीहा) का बढ़ना ठीक होता है। मलेरिया ज्वर में कानर मिर्च के साथ खाने पर इसमें आराम मिलता है।

भिण्डी :- इसकी हरी फलियों में विटामीन-ए, विटामीन सी एवं खनिज तत्व (आयरन, पोटेशियम, फास्फोरस और आयोडीन आदि) भरपुर मात्रा में होते हैं। भिण्डी का उपयोग करने से ज्वर तथा जननांगों में जलन पैदा करने वाले रोग जैसे ल्यूकोरिया, गोनोरिया, डिसूरिया आदि ठीक हो जाते हैं। पेशाब में जलन तथा अन्य मूत्र सम्बन्धी रोगों के उपचार के लिए इसका उपयोग लाभदायक है।

करेला :- करेले में विटामीन-ए, विटामीन सी विटामीन बी कॉम्पलेक्स तथा खनिज तत्व (कैल्शियम और फास्फोरस आदि) मधुमेह रोग में पन्द्रह ग्राम करेले का रस सौ ग्राम पानी में मिलाकर नित्य तीन बार महीने तक पीने से फायदा होता है।

करेले की जड़ तथा पत्तियों का प्रयोग कब्ज दूर करने, शरीर को ठण्डा रखने, भूख बढाने तथा पीलिया रोग आदि को ठिक करने के लिए किया जाता है। करेले का सात ग्राम रस नित्य कुछ दिनों तक सेवन करने से शरीर का दूषित रक्त साफ हो जाता है। पैरों में जलन होने पर करेले के पत्तों की मालिश जलन वाले स्थान पर लगाने से फायदा होता है।

बैंगन :- बैंगन में खनिज तत्व कैलिशियम तथा फास्फोरस प्रचुर मात्रा मे और विटामीन बी कॉम्पलेक्स न्यून मात्रा में होते हैं। बैंगन के फलों को सूई से छेदकर तिल के तेल में तलकर खाने पर दांतों के दर्द दूर हो होता हैं। पेट में गैस बनने पर ताजा लम्बे बैंगनों की सब्जी नियमित खाने से यह बिमारी स्वतः ही दूर हो जाती है। बैंगन का रस निकालकर हथेलियों और पगतलियों पर लगाने से पसीना निकलना बंद हो जाता है।

गाजर :- गाजर में पौष्टिक तत्वों तथा विटामीन की अधिकता होती है। मधुमेह रोग को छोड़कर गाजर का सेवन सभी रोगों में किया जाता है। गाजर के रस का एक गिलास पूर्ण भोजन के बराबर होता है। इसका रस लगातार पीने से शरीर का दूषित और विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते है। गाजर के उपयोग से पीलिया, पथरी मूत्र रोग आदि की शिकायत दूर हो जाती है। गाजर में विटामीन ए प्रचुर मात्रा में होता है।

मेथी :- हरी पत्ती वाली इस सब्जी से ल्यूकोरिया रोग में लाभ होता है। मेथी के बीजों (दान मेथी) का उपयोग करने से कब्ज, अरूचि एवं भूख न लगना आदि विकार दूर हो जाता है। इसके सेवन से यकृत और प्लीहा की कार्य क्षमता बढ़ती है। मेथी के बीजों को घी में भूनकर व पीसकर छोटे-छोटे लड्डू बनाकर कुछ दिन तक सुबह-शाम खाने से जोड़ो का दर्द में लाभ होता है। दाना मेथी के सेवन से मधुमेह रोग में बड़ा फायदा होता है। इसके सेवन की मात्रा २५ से १०० ग्राम प्रति खुराक है। जब तक रक्त एवं पेशाब में शक्कर आती रहे, इसका सेवन करते रहना चाहिए। इससे चीनी घटने के साथ-साथ कोलेस्ट्राल भी कम हो जाता है।इसकी सब्जी खाने से भूख बढ़ती है तथा कमर दर्द में लाभ होता है।

हमारे देश की राष्ट्रभाषा वहीं हो सकती है, जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो। –महात्मा गांधी

''इन्टरनेट का उपयोग और दुरूपयोग'' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

जाट भवन चंडीगढ में 24 नवम्बर, 2015 को आजादी के पूर्व के किसान -काश्तकार व मजदूर वर्ग के मशीहा के तौर पर प्रसिद्ध जुझारू नेता दीन बन्धु सर छोटूराम के 134वें जन्मदिवस पर जाट सभा चंडीगढ़ /पंचकूला की समस्त कार्यकारणी के सदस्यों द्वारा दीप प्रवज्जलित करके दीनबन्धु सर छोटू राम की प्रतिमा पर पूष्पार्जलि अर्पित करके श्रद्धा स्वरूप श्रद्धार्जलि दी गई । इस अवसर पर सभा द्वारा हर वर्ष की भांति स्कूली बच्चों के लिये ''इन्टरनेट का उपयोग और दुरूपयोग'' विषय पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ जाट सभा के प्रधान, डा0 एम0 एस0 मलिक, आई0पी0एस0, पूर्व डी0जी0पी0, (सेवानिवृत) हरियाणा द्वारा प्रतियोगी विद्यार्थियों को लेखन एवं ड्राईंग सामग्री वितरण करके किया गया ।

प्रतियोगिता का शुभारम्भ करते हुये डा0 एम0 एस0 मलिक ने कहा कि इस प्रतियोगिता में चंडीगढ़, पंचकुला, मोहाली व आसपास के विभिन्न स्कुलों के 400 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के माध्यम से स्कूली छात्रों को पोस्टर/ड्राईंग में अपनी कला ज्ञान का प्रदर्शन करने के साथ-साथ राष्ट्र की एक आधुनिक संचार एवं प्रचार तकनीक के उपयोग एवं दुरपयोग के बारे में अपने विवेक व प्रतिभा द्वारा उजागर करने का अवसर मिला है। बच्चों में पोस्टर एवं पेटिंग विषय पर उनके बौद्धिक स्तर को जांचने व विद्याार्थियों के प्रोत्साहन के लिए उनके शैक्षणिक स्तर व क्षमता के अनुसार प्रतियोगिता को तीन श्रेणियों - कक्षा तीसरी से पांचवी तक 'ए' कक्षा छटी से आठवी तक 'बी' व कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक 'सी' श्रेणी में विभाजित किया गया। इस प्रतियोगिता में सभी श्रेणियों के प्रतियोगियों द्वारा ''इन्टरनेट का उपयोग और दुरूपयोग'' विषय पर अपनी कला तथा प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया। प्रत्येक श्रेणी में प्रथम, द्वित्तीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर्ता को क्रमशः 2100, 1500 व 1100 रूपये का नकद पुरष्कार व मैरीट सर्टीफिकेट प्रदान किया जाएगा। इसके इलावा प्रत्येक श्रेणी में 500-500 रूपये के दो सांत्वना पुरूष्कार भी दिए जाएंगें। पुरष्कार विजेताओं को बंसत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटुराम की 135वीं जयंती समारोह के अवसर पर 12 फरवरी 2016 को जाट भवन पंचकूला में सम्मानित किया जाएगा।

इस अवसर पर जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक आई0पी0एस0, (सेवानिवृत) ने दीनबन्धु के जीवन दर्शन का उल्लेख करते हुये कहा कि दीन बन्धु सर छोटूराम आजादी से पूर्व किसान - काश्तकार - कामगार के किसान मसीहा माने जाते है जोकि समाज के इन शोसित वर्गों के हित के लिये उनकी आवाज को सदैव बुलन्द करते रहे । उन्होंने मांग की कि राज्य व केन्द्रीय सरकार द्वारा 'दीनबन्धु' के जन्मदिवस को किसान - कामगार के हितो व कल्याण के लिये 'किसान दिवस' के तौर पर मनाया जाना चाहिये और इस दिन राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर समाज के इस कमाऊ व मेहनती वर्ग के उत्थान व कल्याण के लिये किसान-विचार गोष्टियां आयोजित की जानी चाहियें । यह दुर्भागय पूर्ण है कि किसी भी राज्य व केन्द्रीय सरकार द्वारा उनके जन्म दिवस पर कोई भी कार्यक्रम व किसान सेमिनार आयोजित नही किया जाता और न ही पंजाब, हरियाणा, उतरप्रदेश आदि कृषि प्रधान प्रांतों में उनके नाम से कोई चेयर स्थापित की गई है । उन्होंने यह भी मांग की जाट सभा चंडीगढ़ /पंचकूला की तर्ज पर सभी समाजसेवी व सामाजिक संस्थाओं द्वारा इस दिन किसान काश्तकार हितो के लिये सर छोटूराम द्वारा किये गये कार्यो को उजागर करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहियें । इसके साथ ही जनहित के लिये किये गये सर छोटूराम के प्रयासों व उनकी लेखन सामग्री को भी स्कूल पाठयक्रम में शामिल किया जाना चाहियें ताकि उनके किसान-मजदूर हितैषी अथक प्रयासों से शिक्षित युवा वर्ग को मार्ग दर्शन व नई दिशा मिल सके ।

इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिता के पोस्टरों की छंटनी, चयन एवं परिणाम तैयार करने के लिए डा0 एम0एस0 मलिक की अगुवाई में एक चयन समिति गठित की गई जिसमें गर्वनमेंट आर्ट कॉलेज सैक्टर 10 चंडीगढ के सेवानिवृत प्रो0 इन्द्रजीत गुप्ता ओर इसी कॉलेज के सहायक प्रोफेसर श्री रवीन्द्र शर्मा व सहायक प्रोफेसर श्रीमति अनिता गुप्ता भी सम्मिलित थे। चयन समिति द्वारा निम्न प्रतियोगियों का पुरष्कार हेतू चयन किया गया :-

श्रेणी-ए कक्षा तीन से पांचवीं तक

प्रथम विजेता - रमनीक सिंह दहिया, कक्षा 5वीं बी, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

द्वितीय विजेता - जुनेद, कक्षा 5वीं बी, राजकीय उच्च विद्यालय, सैक्टर 32 डी, चंडीगढ

तृतीय विजेता - उषा किरण, कक्षा-5वीं ए, मॉऊट कार्मल स्कूल सैक्टर 47 बी, चंडीगढ

सांत्वना पुरष्कार - शालीनी, कक्षा-तीसरी, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 20, चंडीगढ

सांत्वना पुरष्कार - वैशाली, कक्षा-पांचवीं ए, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 18, पंचकूला

श्रेणी बी कक्षा छटी से आठवीं तक

प्रथम विजेता - अनूप, कक्षा 7वीं राजकीय उच्च विद्यालय, सैक्टर 32डी, चंडीगढ

द्वितीय विजेता - मोनिका, कक्षा 8वीं, रा0व0मा0वि0 सैक्टर 28 डी चंडीगढ

तृतीय विजेता - अमीत, कक्षा छटी ई, राजकीय उच्च विद्यालय, रामदरबार, चंडीगढ

सांत्वना पुरष्कार - रिद्धी वर्मा, कक्षा 8वीं, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

सांत्वना पुरष्कार - प्रदीप, कक्षा 8वीं, ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, सैक्टर 20, चंडीगढ

श्रेणी-सी कक्षा नोवीं से बाहरवीं तक

प्रथम विजेता - सागर, कक्षा नौवीं, राजकीय उच्च विद्यालय, रामदरबार, चंडीगढ

द्वितीय विजेता - रूपाली, कक्षा नौवीं ए, सैंट विवेकानन्द मिलियनम स्कूल एच0एम0टी0 पिजौंर

तृतीय विजेता - रोहित, कक्षा नौवीं बी, राजकीय उच्च विद्यालय, सैक्टर 32, चंडीगढ

सांत्वना पुरष्कार - तृपति, कक्षा दसवीं, मॉऊट कार्मल स्कूल सैक्टर 47 बी, चंडीगढ

सांत्वना पुरष्कार - सरिता, कक्षा दसवीं, ज्ञानदीप मॉडल स्कूल, सैक्टर 18, पंचकूला

पोस्टर प्रतियोगिता के चित्र

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।